\$ (3 \text{VLS})

त्रोगताम ।

বড়া নিবাসি

প্রীযুক্ত কেদারনাথ বসু কর্তৃক বিরচিত হইয়া

एग्रं असूर्य किंतरम

কলিকাতা

व्याग्यू एक नी त्वत्र हे हरना हत्वा क्या यह

প্রথমবার মুক্তিত। আহীরীজ্যুক্ত নম্বর বাসী।

2592

সূচীপত্ৰ

| নিশ্বন্ট | 17/11 |
|-----------------------------------|---------------|
| l Á | * |
| इति का ← | 8 |
| हेर्राभावसाम् | Œ. |
| अंतिका वसना | * |
| एक वसमा | b |
| हिर्देहकानरभा तम्मनी | > ? |
| ब्रीटामध्य दम्ब | 20. |
| श्रीप्राह्मत वरन श्रीमे | 87 |
| দীতাসহ শ্রীরামের কথা | 52 |
| রামচন্দ্র প্রতি দীতাৰ উদ্ভি | ২ ৩ |
| সীডা প্রতি রামের বিনয়োজি | 58 |
| নীতার শঙ্গহৈতে দেবগণের উৎপশ্বি | રવ |
| দেবতা গণেব প্রতি জ্ঞানকীর অসুমৃতি | ₹ 5 |
| ८ वर्जन कर्जुक राममक निर्माप | 4 5 |
| সীতার অজে দেবগণের বিশ্ব | - 33 |
| बीडामहल्युद (इहानम | 35 |
| মারালক্ষণ কৃত বামচন্দ্রের আবেধি | . : |
| মিরামচন্ত্রকে জানকার পরিচয় | 80 |
| अवारमङ वामनीया | 80 |

| भीकामह आमहुरुम हैए बनदनत खर | \$ 3 |
|---------------------------------------------------------|----------------------------------------|
| वामक्या व्यक्ति श्रेष्ट्रानित खन | ************************************** |
| श्रीविभाषा श्री के बिनारनंत छन | a t |
| बीतामा के बीक छैं र ने कामरमत एकि राका | 3, |
| खीरामें कि निष्मी आ मि स्मरगरनह स्व | (L) |
| बिवामान्स आँउ भक्तर्य ७ मिक स ठावनगरत्य छ र | Ą. |
| রামচন্দ্র প্রতি ভীর্য গণের স্তব | ¥. |
| শ্রীরাম চন্ত্র প্রতি পর্যন্ত গণের স্তব | 8.12 |
| প্রীরাসচন্দ্র প্রতি গয়াস্থরের কব | 63 |
| জী রামচ ন্ত্র প্রতি বুদ্দ ও পশ্ব দিনের তথ | |
| भीषामह औशास्त्र क्लेखां श्रमन | |

রামরাস।

ভূমিকা।

 নমো নমো নারায়ণ ক্রিজুবনপতিঃ याँत श्रम भारत का यना भरक्छी ।। ব্ৰহ্মাৰ জনস্থার স্নাভিপক্ষ**ভে**। शकाद छेरलिख यात इद्रशमस्त्रास्य ॥ হেন মহাপ্রভূপ। মনেতে ভাবির।। व्यक्तिन् वहुन्। ভाষायु इहिष्र। ।। छावि भटन केवि नहि कि स्नीनि कि इग्र। योष्ट्रम प्रदिश्च खन खाना कम नग्न ॥ मृगाल रहेगा हाटर शुंखा गिर्रमा (या। ৰামন ধরিতে যেন চাহে দ্বিজরাজে।। গিরি লংঘাইডে যেন চাহে পছজন। शक्करत् धरिएक (यम मना करत् मनः।। সেই মত আশা মোর দেখি বিপরীত। रुतित्य वियान इत्स्र छात्वदक माहिछ॥ ব্রক্ষা বিষ্ণু রুদ্রপদ করিয়া মারণ। खानुकीका **धाराभित स्**डस रुक्स ह

বিপ্রায় ভয় হোর মলে হয় আর। ভাগাদোধে পাছে পরিজ্ঞান ২য় সার । এই পরিহার মাগি পশিত সদনে। खख्डारमञ्जलाथ मा नामेरत कान खरम ह यमाणि कराक (मध छन्न करि मिर्टा। জ্ঞানের অপরাধ মার্ক্সনা করিবেঞ বিদ্বাল হইলে ভার এই সে উচিত। দোষ তাজি ঋণ ধরে মহতের রীড া বিপ্রপদরক্ষঃ পিতৃলোকের চরণ। শিক্ষাঞ্জলপাদপথ করিয়া স্বরণ।। দীক্ষাপ্তরুপদাস্থ জ মনেতে আঙ্রি। क्षमक क्षममी भाष्मभर्द्धा भिरत प्रति॥ গুরুষ্টানচর্ণপক্ষাফা করি নভি। दिइहिर धांचुनीमा कडिग्रा छक्जि॥ তন্ত্ৰ মত কৰ জীমি ংছিলা নাজানি। জ্ঞানকাতে মহাযোগে কন খুলপাৰি। শৈশরাজ্ঞসূতা গৌরী শুলেন সাদ্যর। জেভাষুদে যে খীলা করিলা রঘুবরে।। চিত্রকৃট লৈজে রাস করিলা যথন : खानकनिम्नी महत्र असूख लग्दान ॥ সেই রামলীলা-কথা বিস্তার করিয়া। কহিব সে সুধারস ভাষার রচিয়া॥ পুর্ণব্রহ্ম অবভার কৌশল্যানন্দন। ত্রীকেদারনাথ বসু করিলা রচন।।

গ্রন্থকারের পরিচয়।

. खाऊक्षेत्र मिरवमन खन यहाँ महा। জাপনার পরিচয় দিতে কিছু হয়॥ জাভাবী পশ্চিমতটে গ্রাম প্রীরামপুর। ভাঁহার পশ্চিমদিক অতি স্বশ্দুর।। বিশিষ্ট সমাজ খাড় নামে বড়াঞাম। कुलीन कायन्ह रिश्वनाथ रसू नाम। ভাহার ভদয় আমি দীন অকিঞ্ন। পর্মাভাততে মন মন্ত সর্কাকণ 🕡 ষুগল ডলয় মোর সর্বা প্রিয়বর ' **८का**हे व्यक्तनाथ वसू १६८० १६०१क मू ।। कनिष्ठ जीतकनाश वसू धनेशाम । गर्कमः कक्षणामुद्दे शक्टित श्रीतान ॥ **अफ्लक सिट्दन्यु मनाद हत्रान**। গ্রন্থারতে স্পক্ষিত হুই বড় সলে ॥ भारक इन बद्दा थन के तफ खन्न। वा करद्रन द्रामध्य कोमगाउनम् ॥ ध्यजूत कीईरन थ्यजू अमूक्त हरन। कर्छ व्यक्तिश्राम रुद्य दोका वलाहित्य॥ পতিতপাবৰ রাম করণাদাগর: কুপাদৃষ্টে হের নাথ তারিতে পামর 🛚 শ্ৰীকেদারনাথ কচে গীতে দেহ মুনঃ। মূতন কবিভারস গুন সর্বজন।।

शरवभरम्मा ।

ারাগিণী ইমন। ভাল কাওয়ানি।
নামা গণেশ গজাবদা। কে হে, লাখোদার এফ
দন্ত, বিশ্ব বিপদ হরণ। থকা কায় প্রভু সকা।
শুভক্ব, পান্ধতীনন্দন ব্রহ্ম প্রাৎপর, ওঁরণ
অরণ আভা কলেবর, বেহি চরণ শর্ধ। ধ্রু।।

जिल्ला

शर्यस्त्र शेष्ठांतम्, व्यवमापि छान्नान् नामान्द्र धर्द कानदर। সর্ববিজ্ঞান বিভিন্ন বিশ্ব স্থান বিশ্ব মহাযোগী পরম **গুক্র**। সুশোভিত চারি করে, শন্ত চক্র গদাধরে, প্রকার পথা শৌতে ভাষ : (यांत्रभाष्टें। सारम धरम, कीए। करंद्र माना हरत, त्रजन स्पूद त्रांका शाहा। कि উक्कम जिनश्रन, गिम्द्रोक यूर्वन, বিরাজিত মুখিক বাহন। व्यवस्य भारत कुलन, मुख्यक्त यनमन, িশিরেতে মুকুট সুকিরণ।। সর্কাত্রে ভোষার পূজা হয়। मर्कि कार्रा अन्तर, मर्किश्वर भदारभर.

বিশ্ববিদাশন নাম, পুর্ব কর মনস্কাম, ও চৰণ বিনা নাহি গতি। প্রামি অভি অকিঞ্ম, না জানি জপ ভজন, দীনে কুপা কর গণপতি।। धाममा धाँव मानाउ. निरायन ७ शामाउ শ্ৰীৱামের নীলা প্রকাশিব। •কবি নহি ভাবি চিতে, কি বলিব কি বলিজে, ভাবি মদে কি রূপে রুচিব।। কুমি হে জগৎ গুরু, জীচরণ কণ্পতরে, मिठा ख्डान कुंद्र (संदत्र मान। कुषावरणांकन कड़, मीरनद्र द्वृद्धिक इद्र. मोटन किर्द्र हाइ खनदान ॥ भुष (माक्ष फ्रांटनामक, श्रीभव एक्सन इस, ষারণে তথাতি হয় নাল। ঞ্জিকেদারনাথ কর, কুপা কর কুপামর, অকৃতী পাদর নিজ দান ॥

अथ काशिकांवमना।

রাগিণী বাহার। তাল জং। কানি কৃপরা মা প্রপন্ন জনে। দরণ করেছি প্রীরাঙ্গা চরণে।। মা তোর নামের জোরে, ভব ভবে নাহি ঘোরে, সার জেনে হাদে তোরে বের্মান সকলে।

ত্রিপদী।

नमामि विश्वविभानि, कोणि कोलनियुविति, मशामधि धूर्वकी आहारमा। শ্বর্গ রুণাতণ ভূমি, সকলের খুল ভূমি, लूबि लामा रूबि लख गरश ।। रद्रभ सीरामितिनी, नरपन आंखा सिनिन গোড়শী রপর্নী সচঞ্চলা। জিনি ভরণ অরণ, **5315**ल देवेग. ন ধরে উদয় শশিকলা।। इंडन स्पूर शास्त्र, जमही का स्त्र शास्त्र, ककारद्र माहिङ डिन शूद्र। किंग्डि किकिनी व्यक्षा, न्यूबक्वंटलारी ध्यत्री, ভাতে গাঁপা ওতন মুখুর। छमुर्क नांचि गंजीव, श्रकारने जियान निद्र, मृद्धमञ्च क्षम्य जड्म। গিরিশৃঙ্গ করিকুত্ত, শ্রীফল কিবা দাড়িস্থ প্রোধর সুধার কলস।। मुभागूक्लान करत, वताख्य मूख धरह, চারি ভুজে দেখিতে সুন্দর। कियां जूवन छेडजूना, शतन त्मादन मूखमाना, ক্ষিরেডে মাঝা কলেরর॥ (कांग्रि ठक्कथण किनि, मूधकाण मूचवानि, সুধারাশি বরিবে বচন।

রাম্রাস।

কৃষ্ণপুত্স মুক্তাক্তি, কিনা দাড়িখের সূচি, ভয়স্কর বিকট দশন। লোকজিজ্বা ওজায়নে, ধারা বহিতেছে কমে, জাতিয়ুগে **শব লিভ দো**লো। **एक्**रिश्वित्रकृतः नष्ट् नाशिकांत्र जून, व्यानशतन जारन आध जाल।! अरबारकणी विशयती, संश्रीतना अग्रस्ती. **ভाकिनी (वाशिनी (क्दब मद्या** जम् भागानव: शिनी, भगात द्रश्दक्रिशी, দেবারি নাশয়ে ভুরতকে।। कड़ांबकांब भदीरदः, यन अतः छारम नीरदः, শোণিতের ধারা কি শোলিছে। होमितक दिष्टि कुछ, जानना निवनुक, भिगांठ रेखद्रद **(व ना**हिस्स । ভালি খণপুরী কাশী, চরণে রাজ সক্রাদী, मिवानिण निजीकन करदा। हमनाक त्रक्रक्रवा, खीलाम मिरत्राष्ट्र (करा, शांत्र अम भूताभूत मद्र ॥ ज्ञिमा मर्वियञ्जना यञ्जनात्रिमीः मश्मारत हिल्कातिनी, महाध्यम्य गातिनी, বিশ্বগতি জগৎ ভাবিনী ৷৷ आिम मीन छाकिछन. हत्रा भद्रगांशव. त्रका क्र भीन हीन छाटम। তরিবারে ভবঘোর, কেবল ভরদা ভৌরু, मा তোর জপার মহিমা বেদে শুনি।
তাই তাকি প্রাণপদে, হুলা কর এ প্রপদ্ধে,
তবে দে মাহাত্মা বড় গণি।।
देशपठी হরজায়া, দাক্ষায়নী মলামায়া,
বিশালাকী বারাহী বিমলা।
তথাগাথা রক্ষেন্তলভী, জয়া সুনদা বৈষ্ঠা,
ক্রপদন্ধা বছলা বগলা।।
ক্পাময়ী কুপাদ্দেই, বারেক চাহ গরিষ্ঠে,
তুই হয়ে তাপিত তনয়ে।
প্রীকেদারনাথ বলে, স্থান দিও পদতলে,
এ দাদের নিদান সময়ে।।

अप्रश्नांत दम्हनाः

রাগিণী কালাংড়া: তাল এক চালা।ই হের মা অপাজে গলে করুণাকারিণী। তথেদা মোক্ষদা গলা, ত্রৈলোকা তারিণী। ঐ বারি কারণবারি, স্থষ্ট আদি সুসঞ্চারি, শিরে ধরে ত্রিপুরারি, ত্রিভাপধারিণী। গ্রন।

. লখুত্রিপদী। . -

দেবী সুরেশরী, গিরীস্ত্রকুমারী,
মাডা ভগবতী গলে।
ক্রিপথ গামিনী, ক্রিবোকভারিণী,
ভব ভরল ভরলে।

मसुभित्तांत्रनि, পভিতপাবনী. ভাগীরণী নিরাকার। खांगम निगरम, नाहि मि एक मौरम, ত্তব মহিমে অপার।। ও-জন মহিমা, অতুল জনীমা, কুপাম্য মাত্রগঙ্গে। हित्रशासाहिता. जत्रश्रिनी निरा. বিশ্ব ধৰল ভরকে।। ছুরীকুল মন, ছুদ্ধ তিকরম, ভবসিন্ধু কর পার ৷ ভোমার স্থিলে, জীবন তাজিলে, भू बर्जिया नाहि खातु !! ভোমারে যে জ্বন, কররে ভজান, তাহারে রক্ষ তারিণী। नगरनत खत्र, खांत्र नाहि हत्र, कारूवी (गाक्रमाविनी। পতিতোদারিণী, ভীয়ের অননী. विश्वमधी लाक्नाछ। ত্রিভাপহারিণী, শোক নিবারিণী, কুরু কুপা ভাগীরখী॥ ভব কুপা যারে, থাকে এ সংসারে, ৰম তারে করে ভয়। চতুর্বর্গ ফল, ভার করতল, े श्रेबः शर्डवान नग्न।।

>.

नद्रकदांद्रिशी, कन्नुमनानिनी, নোক্ষা আফ্রী গঙ্গে : अप्रक्षप्रशास, अपिन कीशास्त्रप्र रहत मां कक्षपांशाटक !! मुच्या खंडरम्, अशन्यम् (अमर्थ, সুর্ধুনী ভগবতী। রোগ শোক তাপ, সংহর গোপাপ, গঙ্গে হর মে কৃষ্টি।। टम्बक्शांतिको, क्वानांकांत्रिकी, (मह मा ठर्गा खग्र मर्माटन ट्यामाङ, श्रूरमाङ स्थाह, ज्यामीरमण्ड भाभ व्हा ॥ নিকটে ভোমার. তুমতি বাহাত. (भर् स्नम পুन) भीन धनवस्र देवरम, তোমা हीन प्रत्यः, नरह नृश्वि जुनीन !! ক্ষঠ শরীতে. वर्वाभक्त नीद्र. কিন্তা নৱট সকরী। धक्क कदि मानि, পून्य मत्था स्नानि, দেবতা তুলনা করি ॥ ভো ভুবনেশ্বরি, শেতালী সুন্দরী, সুরাসুর বর মাতা। ভিন সংসার, সকলি ভৌমার, তুমি মা ধাতার ধাতা।।

ভব জলে পাক, জন্ন কিন্তা শাক, দেবতা ছুৰ্লভ গণি। त्त्र अञ्चल वाय, यम्ब्य याय. करहरक्रम ट्यांन प्रुनि॥ कृशं न्दर्भ का नि. ज्योदश का नी, ভোমারে কিভি আনিল। बक्तमारश ४१म, डाँत शृर्वदर्भ, ভাষরারে উদ্ধারিল। খাতেক বোঞ্চনে, থাকিয়ে যে জনে, नका नका मूटन रहत। थण (महे नव, र्भुन) करणवत्र, **ं धानारम् रे**नकृष्**श्रे हरन** ॥ সাগ্রগজ্ম. স্থান অসূপ্ম. भरमाम शोश हरतः ব্ৰহ্মহত্যা পাপী, হয় বিফুক্ল, ें সকরে স্নান যে করে।। অপমূহা কয়, নারায়ণ হয়, व्यक्षि विषे भए । महाष्ट्रवाठांती, शत्रूष ७ वाति. चकात्र रेवकुर्छ हरन ।। क्ट माहि भा निवानि। পিতা মাতা বৃত, দারা সূত কত,

আর বত বন্ধু জানি।।

कीरन इंडिटन. भागारन छ स्टान. ক্ষণমাত্র হ' হতাল। इद्रिक्द्रिवरण, चाद्र अरग हरत, পরিয়া হুডৰ বাস ॥ शिकारम समिन, जूमि सुक्यूबी, शृक्ष रहनं कत (क्वारफ! शिशु नद्रकुरा, भर ममकुरा, (इन मग्ना (करा करता। জীবন পর্যান্ত, সকল সম্বন্ধ, অত্তে ডুমি কর থকে। ত্রৈলোক্যভারিণী, করণাকারিণী, (मदी सदमग्री शंक्या। প্রসার চরণ, কবিয়া'সারণ, ৰচৰ মুদিত কবি ! ्कहर इं क्यांत्र, श्री श्रम श्रमांत्र, हदरम प्रिंथिश गति।।

चल और ठिउना एमर रम्मन।

तोत्रां निधि कोशा र तित्त शावाद्ध। छा छ क्रि
न एम शूर, कोशो तिन रम तोत्र, छोटत ना एमसिम्रा क्यांग काँएमर हा। हिम्रा विमन्निमा याम दि । चामि काँथो योत रह ॥ आ॥

जिलमी।

दम थङ् बीहिङ्ख महीद्र कूमात्र।

নবদীপে অবভরী, জীগোরাক রূপ ধরি, লীলা কৈলা অতি চম্ৎকার।। খক্ষ কলিমুগ গক্ষ, স্থাহে প্রকৃতিন, নরবেশে গৌরবরণ। শত কোটি ইন্দুপ্ৰভা, - क्लिनश रद्रण बाला, মোহ বায় জগতের জন !! নবীন কিশোর কাম, তেজোরাশি দীপ্ত পায়, भादिमम्पन मट्स यकः हाडिया मध्यात काण, कतित्व धर्ममञ्जाम, প্রকাশিলা প্রেমবস কর। কমগুলু করে করি, কটিতে কৌপীণ পরি, ্ বহির্ধানে করি আছোদন। মুড়ায়ে চাঁচর কেশ, ধরিয়া সন্মানীবেশ, अ[तिर कत्रात्र खमन। शृत्य महा इदितान, जीम मध महाद्वान, অভাবোল মুখে নাহি আর ! र्दानाम श्रकाणिता, मुक्किश्य (प्रवाहेगा, অনায়াসে তরিবে সংসার।। জীরাধিকা ভাবে হরি, জীগোরাল রূপ ধরি, द्रोधां छोट्य क्ट्य श्रेम श्रम। ঢলিয়া পড়েৰ ধরা, ভাবেতে ৰা যায় ধরা, ় রাগানাম ভক্তির দ্রদ।। गःकि रेतकश्वन. इतिनामे मध्तीर्जन,

दांद्य थान कंद्रलान, क्रिट्र वरन जान जान, কেছ ভাবে গড়াগড়ি যায়।। छेक् ग्रुट्य छेक् लरम, विश्व नाटह (क्षामहरम, কেত বলে হরি হরি বোল। কেই মোহিতে মহাতে, পড়ে কান্দিতে কান্দিতে, কেছ ভারে ধরে দেয় কোল। छोत्रि (भाषाध्यि माम, गाँठिया भाष्ट्रेया त्राम, मीलांडरन कड़िना शंमन। নহাপ্রভু জীচিতভা, সংগার করিলা ধলা, (प्रकृष्य) रच प्रमुख भाइन ॥ हांडा পভু जीत्रीदान मया क्य मीटन। আমি অতি মুদ্ধতি, নাজানি প্রেম্ফক্তি, করুনা কে করে ভোমা বিলে॥ कृषिङ कक्रमानिञ्ज, किश्चिर कक्रमादिन्यु, **में** नरसु भीत्न कड़ मान। शूरां स्टब्स आण, त्या निया कर मान, হাহা প্রভু কর পরিত্রাণ। নিছে সংসার সায়ায়, সুহ কারাগার ভায়, মুক্ত আমি হব কত কৰে। कक्रमी कतिए। करत्र अध्यक्ष सार्व छरत्र करव काभि वर्षि वृक्षांबरम ॥ मूर्य ७व अन शाव, कुरक्ष कुरक्ष (भरन) थाव, সম্ভাষিত প্ৰভুভজগণে। ব্রহাসি পদরেশ, ভূষিত করিব তত্ম, गर्यमा विकित गाधुगरन ॥

এই মনে অভিলাম, পুরাহ দাসের আদি,
তবে ধক্স হয় ন্যকায়।।
প্রাহেদারনাথ বলে, মহাপ্রভু দয়া হলে,
তবে ঘুচে সংসারের মায়া।।

গ্রীরামচন্দ্রকশন।। নিল্পদী।

इहेरव शामत बास्त, नगमि सामकीकांस, ব্বামচন্দ্র জবিলের পতি। পূর্বব্রহ্ম অবভার, বিশ্বরূপ নিশ্বধার, कुलापृरहे हारू मीन প্রতি॥ जुमि कुन्ना कत बाद्य, हजूर्वर्भ मिर जादि, थना धना जुटर ভारत क्या বিপত্বাভঞ্জন তুমি, আকাশ পাতাল ভূমি, ভোষাতে উৎপত্তি সমুদয়।। ভাস্করকুলের পতি, দীনের হুষ্কয় জতি, (रुट्ड एग्रा क्त द्रामधन। ভুমি রিফু ভূমি হয়, ভুমি ব্রহ্মা পরাৎপর, ्रुमि नर्द्ध जीरवत्र जीवन् ॥ जन्दनिमी मरल, कीड़ो बाद्र मरनांद्रक, বিরাজিত রাজসিংহাসবে। आंमि मीन कियां कर, मिक्करण नक्षण छर, भिद्र इत श्द्राष्ट् यज्ञान।।

গ্ৰহস্ত হোড্ছাত, খন ঘন প্ৰণিপাত, क्रिट्ड छड़ड खगांक्ड ! मुक्तव कामद लाख, भक्त में छा देख, हद्रान पूर्वाय निरुखत् ॥ नवपूर्वीपनशाम, किरांक्रश किवाधाम, चत्रभ जुदान (क्या भाग्र। किया महामध्य शान, विस युद्ध किनिमन, মধুলোভে অনির্শ ধার।। বাসকরে ধকুধান, নক্ষিণকরেতে বাণ, नटल मनिमग्र शांत (मांटल। **(इरत दम्दान होम, मिलन इरेशा हैम, डामिट्डाइ क्वक्**ट्रिल्लाका ख्यदान कुला किना, कुल्द ब्रख्नी निना, ' আতার করেছে অভিগার। **চक्ष पूर्वाकांश्व बाह, कुछ मनि हम्पकाह,** অবশের-মূলে শোভা পায়! होद्रक मूक्डायत्र, नीनकास आमि छण, অঞ্লেলেভে নানা আভরণ। क्डवा कृष्टिव (णांखा, खनारखन मरनारवाखां, লজ্জা পায় শশির কিরণ।। क्रीमिटक श्वित्रया श्वित, मांछा शात्र मिरानिनि, ভাবেতে হবিত হয় মনঃ। भक् छोत्र कविद्राम, नदव दल द्रोम होन, धमा (सह प्याचीपा पूरन।।

कि कतिव खलूमान, शामशंखा रुष्ट्रमान, পড়িয়ে ৰতই শোভা পায়। बाब्गीकि निषम् अहे, धक्छ ध्रधान महे, রুদ্ধ অবভার বলে যায় এ বানেতে জনকসূভা, কিবা স্প্ৰণযুতা, कुत्रान खिलाक नजमन। क्षानम कि भरनाइत्र, स्म श्रेष छादिरम शह, **छ एक भाग ह**लू वर्ग कन ।। সাৰা জাভরণ গায়, বতন মূপুর পায়, योकाद्व अमन्न कारण नारखा। চরণমধ্বে শশী, অভিপ্রায় পতে ব্সি. নিম্নে কত ভাস্কর বিরাজো।। কি কহিব অপরপ, সুনাভি অযুতকুপ. क्रमही क्रिनिया यशकान। क जाटक नामात हैन, कजू नटह जिनकुन, काछि हैं। बिनिया वयान ॥ गना हि निमृत्रविसू, विद्धित छन्न हेसू. **ार्ट्सिश करत्र जिल्लामा**। বিশস্থিত কেশজাল, নিন্দি কত মেঘমাল, वाश्चिमारक कवती हिक्य ॥ व्यवना स्कामना (मरी, वाहात हत्र सित्, मह्ल महानी इस द्रम । ত্রিলোকের মান্য যেই,ভোমার বামেতে মেই, महालको आनको क्रम्य ।।

```
সর্ববোকহিতকারী, রাক্ষস দানব মারি,
         অমরের ঘুচাইলে শঙ্কা।
महाद्याप कृषि हति, त्रावरत निधन कति,
         विकीयान ममर्शित नहा।।
थांगीत्रन (थांगांत्रतः) शाहश्रम छाटव-मत्न,
         উक्षियुः च मूमिया नयन ।
नुष (याक काटनां प्रम, त्यां याद कि किएस क्रम,
        गांत राश (य सन मुख्यः ।।
यमिनत ভागाकरन, प्रजाबारन द्राम्बर्टन,
       পাপে মুক্ত হয়ে মোক্ষ পায়।
পভিয়া विशेष (चांदर, णांकिया अकिटबारर,
        অবহা ভরিয়া সেই যায় 🖟
नाहि कारन मरद्युत, त्रामनाम विकायहर.
        মধ্যেতে কতই আছে রসন
এক নামে কত ফগ্ন, বিধা ভূমি রসাওল,
        कर्षा यात्र नाहि भरत यमाः ।
आंगि पीन किया कति, ना आनि उक्रन हिंत,
        স্বঞ্জবে কিস্করে রাখ পায়।
त्रांभनीमा ध्वकां भिष्ठ. भागम करवृद्धि हिष्ड,
         বাদনের চন্দ্র ধরা প্রায়।
স্থান অহে ঞ্রীনিবাস, পুর্ণ কর জভিলাব,
       ভোমার কুপাতে কিনা হয়।
রমুনাথ নীতাঞিয়, অতে দরশন দিয়,
        शिक्ताइनाथ वनु वय।।
```

জীরাসচন্দ্রের বনে গমন।
ভক্ত ধ্রুনন্দ্র। রাম পভিতপাবন। জাগদীপ্র
জগজীবন। ইচকাল গেল কাল ভাব সে কাল
বরণ। বুগা কাজে দিন পেল, মুখে রাম রাম
বল, কেনার কহিছে প্রভিক্ষা। প্রা।
পরার।

কৈলাদ ভূধর জভি মনোহর স্থান। इत गह रेह्यतकी खासत्य त्यंताम ॥ मिटा वृङ्गिः श्मरमाभरत छुडे सन्। লম্পে খেলার বড়ানন গঞানন ৷ बादर में भी महाकान जिल्ला धनिया। कहिएक चरम तर कोजूक करिया। পাৰ্কভীর প্রতি কন দেব পঞ্চানন। क्त आर्विशिश केहि अ**शृर्व कथ**न ॥ सूर्व।वर्ष्ण विकु जामठल अवजात। गौडा नारम महानक्ती প্রিয়সী ভাঁহার॥ कतिना जारमय नौना आमकी महिछ। পরম পবিত্র কথা শ্রীরামচরিত।। शीती कन धार्ममाथ कति निरदमन। শুনিবারে ইচ্ছা বড় সে সব কথন।। কি দীলা করিলা রাম জানকীর সহ। বিস্তার করিয়া তাহা এ দাসীরে কহ।। চন্দ্ৰ হৈলন গুনহ চন্দ্ৰাননী। मीजा गर जामगीना देवना त्रव्यति।।

সেই রাগদীলা কহি অপুর্ব্ব কথন। স্থির হয়ে ভগবতী ওল দিয়া মদঃ।। পিতৃসভা পালনেতে রামচন্দ্র ববে। क्ट्रेटनम दनवांशी क्लांड चारहम मरद्रा। महत्र छ न क मृत्र । अ युक्त दान्त । ভপশীর বেশে সবে প্রতেশিল বন 🗓 মণিময় অলকার জ্ঞানিকা সকল। পতি অমুরাগে দীতা পরিল বাক্ষ।। कुछन रिनार्य भगे। करिया मृत्यद्र । পভির দেবার রঙা রজনী বাসর॥ কৌশল্যাভনয় আর সুমিত্রানন্দর। পরিবেন বৃক্ষাল হাজিয়াবসন।। পুর্ব্নে ধ্রাছাল শরতূণ লোভে আর। বামকরে খতুক মন্তকে জ্লটাভার।। नान। करहे वरन वरन खरम जिन सन ठिखकुषे रेभरन निम्ना निम महणन ॥ পাত্রের কুটীর বান্ধি বঞ্চেন ভথার। বঞিলেন কড দিন কথায় কথায়।। ক্ৰনে জনে উপনীত মধু চৈত্ৰ মাস। শুক্ল নবদী ডিখি শশী সূপ্ৰকাশ।। সেই मिन द्वाघरवन्न समाजियि रुन्न। লক্ষণ মাইল বলে ফুলের জালয়।। श्रक्ति इंजिक्ड्स युक्ति मिन गाउ। बीदारमङ हामनीमा द्रविष स्माद ॥.

সীডাসহ ঞীরামের কথা। প্যার।

आरक्ष कविश्व वाम कम कामकीरक। चाकि दछ दूश्य शिख स्टेन महीदत ।। জগতের লক্ষী ভূমি শুনহ বচন। मिहे कथा नाहि साम धार्मद्र अन्तर्भा। ভোমারে কহিব ভিন্নে গুন দে ভারতী। श्रीयायनवयी जना ननांखनी किथि।। আজি মম আশ হেডু শুভ্ৰমিন হয়। क्षत्रिक नान। मूच जुः क्ष क्षत्रमग्र ॥ विश्वी महिल चार्र मर्काहाह कीटन। কে কোথা বা সুৰভোগ করে জন্মদিনে।। দেবতা ব্ৰাহ্মণ গুৰু ভঞ্জন পুঞ্জন। क्षयं मित्र कर्श्व थारक क्षत्र क्षत्र ॥ नाना मिछे अब जुरक्ष नाना क्लोड़ा करता। বাদা গীত নুজ্ঞ করে হরিব অস্তরে।। (य (दमन मिट्टे में के बूर्का (कर्ष मह) खन्मिति करत्र की छ। (समन महरव ।। विविध कुनुषमान। विविध कृष्ण। পরিয়া সুখেতে दिन করয়ে যাপন।। स्वित्व थित्रीम स्वत्र स्वामि कि क्रिट। বিধাতা ৰঞ্জিত মোরে কোথা কি পাইব॥ वनहात्री हरत जामि वस्टे दृश्वित। अध्यक्ति कांत्रच नेकाल कार्याक अस्ति ।।

खाए। यम मुर्थद कण्लानी कद मञी। আমিহ ভোষার স্বামী খন গুণবভী।। करब्रक्ति महिन्त अरक छात्र दनगांती। आमा रेट्रक किছू मूच नहिरद खामादि । হলাপি সভীর স্থামী এভাদৃশ হয়ণ महारदांगी कु है छड़ भूर्य इताणह ॥ कि वृद्धि मीनशैन अस नाहि घटत। ভথাপি সভীতে কোখা পতি জাগ করে 🛚 পতির দেবার তুলা নাঁহি আর পুণ্য। ষে না করে পতিসেবা সব ভার শৃষ্ণ। পতিদেবা মহাপুণ্য বেদে কয় স্থির 🕒 পতির সমান গুলু নাহি রুম্ণীর 🗈 পত্তির বে অভিনাধ বাতে পূর্ব ইয়। न**ीत भा**नम वर्षे तुक्ष ह**रा नंग**॥ ভূমি মম প্রিয়ডমা মিরূপমা গ্রেণ। শরীর শীভন হয় তব ধণ শুদে।। আদ্য মোর জন্মদিন গুভক্ষণ অতি। আমার মহতী পূজা কর ওণবড়ী।। दिन कि नात बुक्ति कानिया निण्डि। রচিল কেমারনাথ শ্রীরামচরিত।।

রামরাস।

প্রীরামচন্দ্র প্রতি গীতার উক্তি। ত্রিপদী।

গুনিয়া জানকী কন, এ দাসীর লিবেদন, তব জগোচর কিছু নাই।

ষে দেখি ফুঃখের দিবা, কোপায় পাইব কিবা, বল কিবা করিব গোসাঞি॥

গুন আহে দয়াময়, সেই লারী খক্স! হয়, প্রিধার্ম নুজা ফেই জ্বন।

বিশেষ জানিরা যুবে, স্থার বা ভড়ীগণে, ভেয়াগিত্ব ভোষার কারণ !!

ংগ্রিনীর বেশ হরি, কাননে ভ্রমণ করি, হইরাছি নিযুক্ত সেবার।

হেরিয়া ভোঁমার মুখ, ছঃখে মোর হয় সৃখ, জীবন নিপেছি রাঙ্গাপার।।

মনের যে অভিবাধ, ভেবে নেখ জীনিবাস, কেমনে মহতীপুজা হয়।

কোথা কি পাইৰ হরি, ভাবিছা গুসরি মরি, কি করিব বল দয়াময়।।

अनगिजियित पिरन, भूबी श्रम्भ धनशेरन, मक्का वर्षि मर्कीक्षांक आर्थान।

হুৰ্গতি ৰাইবে দূৰ, চলহ জনকপুর, বিধিমতে পুজিব দেখালে॥

जनक जननी जारह, कहिशा जारमत कारह,

----:== यात्रजी विस्तृ।

ভোষার জুড়াবে প্রাণ, জামার থাকিবে মান,
কি কাজ কাননে রছুবর।।
ভাতে যদি মন নয়, কি করিব দ্যামন্ত,
কমে নারী কুর্মবালা ভাত।
কে আছে জাপন জন, কারে কব বিনরণ,
কে মোর ছুচাবে এই দায়।।
নারীর ভরুদা পতি, প্রার নাহি জল্প বভি,
জামারে বল্ল জনুচিত।
ভোষার সেবার রই, নাহি জানি ভোষা বই,
ভবে কেন কহ বিপরীত।।
বিবরিয়া রানরাস, প্রম্ব সমান ভাষ,
প্রবংগ পবিত্র দেহ হয়।
ভাতর প্রবিত্র দেহ হয়।

সীতা আছি জীরাদের বিদয়োজি:
রাগিণী ভৈরবী। ভাল ধেমটা।

श्रीरक्षांत्रनाथ वसु क्य ।

বেদাগনে, তোমার মহিমা শুনেছি, সেই সে ভরসা দৰে। কৃপাময়ি সনাতনি কুরু কৃপা দীনজনে।। সৃষ্টি স্থিতি কি আলয়, তোমার ইক্ষার হয়, কারণে বায় ভবভয়, ভাই ভাকি প্রাণপণে।। গ্রা

ব্যব্যাপ /

श्राद ।

প্রীরাম বলেন প্রিয়া ওন মম বাণী। ভূমি যে বলিলে ভাহা সন্তা করি মানি।। बिश्री नटक किन्दु स्व विविद्या नव नन्छ। প্রবৰ করেছি পুর্বের তোমার মাহাত্ম।। বিশাণিত্র মুনি আর বশিষ্ঠ ভাজন। आंभारक करिन कृषि ७ श्रेगात थन ॥ व्यटल करनिह कृषि खिल्नशहिनी। অগতের শক্ষী ভূমে ত্রিলোকভারিণী।। का धिक कहिरक अभी ठरक ४८६ खन। জোমার যতেক হণ গুলেছি লকর। अनरकृत्र त्रांक्षमकी ध्यक्षन ध्यक्छी। ব্রহ্মা বিষ্ণু মুহেশ্বর ভোমাতে উৎপত্তি 🛭 क भव शक्त उर कहिया व्यवत्। ক্রিকু ভোমারে প্রিয়া সেই সে কারণ।। किन्द्र ভाবि মুनिरमत्र शंका देश जून। ভাবিয়া ভাবিয়া প্রিয়ে জীবন আকুল।। অভএব চাহিয়া রুয়েছি তব মুধ। 📤 হেন সভীর পত্তি কেন পাই দুঃখ।। ष्मात्र এक कथा रशि श्वन ध्यारनचत्री। रुखिन। नगत्र चामि यटक नगती ॥ পৃথিবীর বভ রাজ্য আছ্রে সুন্দর। त्म नवांत्र सरधा (ब्यंड भरवांशांमगङ्ग ॥

পুৰ্বেতে কয়েছে যড দেবতা গোদাঞি। फ्लाबर दुणंद ज्ला दश्य आदि नारे ।। এই চেতু অস্তা বংশ না করি গণন। অন্নিসু সুই্যবংশে সুখের কারণ । সকলের শ্রেষ্ঠা ভূমি সর্বব ওপবভী: हरम् इ आगात छार्गाः स्वनकमस्रु ।। सनह क्षिप्रिंग आमि डारि निभि पिता। कागांत वांशिया वत नां करत्र हि किया।। महोमान। महारमत नकरणह नांत्र । क्र तर्छत्र भूकनीय महिमा व्यथात्र ॥ দেশ্য ভোমার ক্ষতে কি ভাবের বঙ্গ! সে হরের ধরু আমি করিয়াছি ভক্ত । ভোমার লাগিয়া কর্ম করেছি ছফর। পর্শুরামের সহ্যুদ্ধ নির্ভির,॥ এ विधि वुकार धनी छव छारनगामस । दाक्षानं इत्य (गाँद वनवान इस !! शृह्णां कति अहे श्रादिणमू दन। यङ किছু দেখ তব ভাগোর লিখন।। পিতার হইল মৃত্যু মাতা পান ছঃব। শক্রত্ব ধনে নাহি সুখ।! .লক্ষ্টের হইয়াছে ছঃধিত অন্তর। क्त विनार्कत्र कृश्य कहिएक विस्तत्र ।। . क्षाचात्र रहेग प्रश्न कि करिय चात्र। छव जानगरम अहे हहेन जामांत्र ।।

्रक्कशे क्षतनी चीय मृत्यंत नानियां।
निजात निकाने तांका नहें मानियां।
कत्रक कित्रक तांका क्षतनीत मनः।
मञ्जा कित्रया स्मारत शांकाहेन वनः।
कितिक कक्ष्मण कर्ज कार्याहेन दूर्थः।
कार्मात कार्या वृश्चि रिक्षाका रेक्स्यः।
मृतिका माजात द्वार्थ स्मारत कि धनी।
मृतिका माजात द्वार्थ स्मारत कि धनी।
कार्मात क्ष्मण स्मार स्मारत कि धनी।
नातीत क्षाल स्मारत स्मारत क्ष्मण ।
नातीत क्षाल स्मारत स्मारत स्मारत स्मारत ।
क्रिक्स वृद्धिमात क्ष्मण व्यापनात ।
क्रिक्स स्मारत स्मारत ।
तिकार स्मारत स्मारत ।
निकार स्मारत ।

সীতার অঙ্গ হৈতে দেবগণের উৎপত্তি। মা অনস্তর্মপিণী অন্ত মায়া কে জানে! হরের

ष्मर्गग खना खन (कानश्रारन ॥ क्षः॥

প্রার :

শুনিয়া রামের বাক্য মলিন বয়ান।

তঃখেতে কহেন দেবী শুন ভগবান।

নকলি ভোমার ইচ্ছা তুমি ইচ্ছানয়।

ভামারে লাঞ্জনা করা ভাসুচিত হয়।

ভোষার লাগিরা হই কানমবাসিনী। আৰি কি হইতে পারি ছুর্গতিনাশিনী॥ ভোষার অধীনী দাসী নিজ বস নর। हदूनरमवाम् मण्डि हिडमिन त्रम् ।। ভাজিলে হরের श्रम् खानाইলে জোর। करव तम अरखक कर इतमुखे त्यांत्र if ভোষারে মেবিতে আমি প্রবেশিতু বন। कथन सामिना किছू विना ७ हत्।॥ **उ**ट्य वृद्धि मानीट्य कहिटन मनामन । ट्यानांत्र महद्ये शृक्षा याट जाकि रह ॥ এখনি করিব তার বিবিধ বিধান। जाशनि चुड्रांच शिव्रा करत अम स्रोन !! . १८ इत्रल शांटक यपि अ मानीत मनः। बरकान जाम्हर्या कथा कतितृ अयन ॥ খণ্ডর খাশুড়ী পদে করিয়া প্রণাম। ভোষার মহতী পূজা করিব হে রাম।। क्षमिश्र द्वाचर स्थान कत्रिराद्य जान। अधारम करतम मीठा श्रृष्टांत महाम ॥ नचान निष्ठांदक्ष तदन जानितांद्र कन। विष्णव बुखाल (महे ना स्नाटन मकन।। নিস্থাস ডাঞ্জিয়া সীতা দশদিকে চায়। অন্মিল দশক্ষন দিকপাল ভার।। কহিতে বুক্তান্ত সৰ সচৰিত হৰঃ। देशीए अधिय देश आमि प्रियंग ॥

নেত্র হৈতে বিশ্বকর্মা হইল বাহির।
'নোমকূপ হইতে ভৈরব মহানীর।।
শ্রীরাদপদান্ধ হৈতে আপদি কেশব।
নীতার দক্ষিণপদে ব্রক্ষার উদ্ভব ॥
নাভিপুখে জনমিত্র আমি মহেশর।
করপে তেব্রিশ কোটি জন্মায় জমত্র।।
জানকীর চৌদিকে খেবিয়া মোরা সব।
বিধি আদি বিধিমতে করিলাম স্তব ॥
কহিনু আদেশ কর ইসেছি চঞ্চল।
কি হেতু স্জিলে এই দেবতা সকল।।
কি কর্মা করিতে তব হইবে এখন।
কহিছে কেদারনাথ গুল দিয়া মনঃ।।

দেবগণের গৈতি স্থানকীর অনুসতি।
রাগিণী থাসাজ। তাল ধিমাতেতালা।
মানসে ভাব সে দুর্বাদলভাম। বদনে, বল
জয় জয় রায়, রবেনা যাতনা আর, অস্তে
পাবে মোক্ষধান। রামনামে পাপ কয়, শমন
দমন হয়, ভাবিলে সে পদধয়, পুর্ণ হয় মনকাম। গ্রান।

পদার। হাসিয়া আনকী কন শুন দেবগুণ। আজি ঞ্জিনকী তিথি দিন শুভক্ষণ।।

শ্রীরামের জন্মদিন এই চৈত্র মাস। ভাজি সে হইবে আমার প্রীরামের বাস ভোমতা উদেঘাগী হবে করত উপার। আমার মান্স সিদ্ধ শীল্ল হয় ধায় । কানন কাটিয়া কর শ্রীরাসমপ্তল। শতেক ৰোজন ভার পরিমাণ স্তল । ষোড়শ যোজন উৰ্জ্বে দেখিতে সুন্দর ! পাষাণে নিৰ্মাণ কর স্থান মনোহর !! क्षिक कुभूमतुक दिल्ल कदिया। ভুবনের শোভা আজি গহত হরিয়া।। নানা দ্রবা ভাষোক্তন করহ ছবিত। रुधि ছक्ष कीत्र मह आफि मत्नामीछ ॥ প্রানহ বিবিধ খাদা বাদ্য নানা মভা আৰু আৰু কৰ কত যাহ! পাৰু যত।: শুন শুন বিশ্বকর্মা আর ভগবান! গোলোকের সম কর পুরীর নির্মাণ।। দ্রব্যের সুযোগ **জন্ম** পাঠাইরা দুত। অতি শীন্ত রাসমঞ্চ কর্ম প্রস্তুত।। ব্দগতরমণকর্তা আপনি শ্রীরাম। তাঁহার সহিত আমি করিব বিশ্রাম।। द्राममश्रद्धारक क्वीका कदिव द्रुवन। পবৰ গমৰ কর অধোধ্যাভূবৰ ॥ দেবর ভরতচঠা আরি শক্তেয়। নিদত্রণ করি আইস **আ**সিতে এখন।।

জার এক কথা বলি শুন দেব সবে।
নানা দ্রব্য দিনী জন্ম পাক কর ভবে।
যাতে আজি ভুর থাকে শ্রীরাদের মনঃ।
ভাগে উদ্দোগ জ্বন্ত করত গমন।।
আক্রোপাযে দেবলণে করে মনোনীত।
ইচিত্র কেনারনাথ শ্রীরাদ্বিত্য।

দেবগণ কাভূক রাসমঞ্ নির্মাণ । রাগিণী আবালিয়া। ভালে ধিবাতেভালা।

चार्ड, उर्भनक् (कास्ट्र दाम। चार्ड उस्म रि-होन, जामि मीन होन, मीरनद द्वास्त, पूराख रह अन्याम। उद नार्य उत्तरक्षन स्व याम, उर्द रम नाथ हर्द निक्ष्णाम, चार्ड स्वान मारम पिछ द्वाकाषाम, नाम क्षणि क्रविद्याम॥ कृ॥ श्रीह ।

তবে দেব বিশ্বকর্মা ভাবিয়া তখন।
কুবৃক্ষ কণ্টক জ্ঞাদি করিল ছেদন।।
রমণীয় বৃক্ষ সব রোপণ করিয়া।
গ্রেস্ত করিল বেদী জপুর্বন রচিয়া।।
প্রথমত চতুদ্ধোণ বেদীর প্রমাণ।
ভার পরে চারি কোন্ত বুঝার সন্ধান।।
পারে ছয় কোন্ত মধ্যে মনোহর স্থান।
নির্মাইল দ্বানা জঙ্গুলি পরিমাণ।।

প্ৰিড বিধান জার কোম এক শত। আৰু সে চবিশ কোঁঃ মঞ্চ মনোমত।। লৌহ আবার ভাষু নিয়া গঠিয়া সুন্দর। মুড়িশ রক্ষত হেমে বিস্তর বিস্তর । মণি মুক্তা প্রবালেতে লুক্ষর থচিত। नाना आहि दुक्त माना भूष्ण धायुष्टिय। অশোক কিংঙক বন্ধ মাণ্ডী গলিকা। कमन्द्र हम्भक छांजी गुजी (मर्गालका।। অতসী ভগর যাটী সেঁওড়ী পারুল। शक्करांक विभिन्नका वाकम वक्का।। কামিনী প্ৰাশ কুল কেডকী কাঞ্চন। क्रमां या द्रक्त स्ता मांभनी इस्मा बांबी वर्त नांबा भूष्य त्वचिएक गुम्बुद्ध । 🕶ञ्जतियः मधुभारन मक मधुकत्। আরি বে বৃচৎ বৃক্ষ আছে স্থানে স্থান : পল্লবে পূৰ্ণিত হয়ে আছে ন্যুমাণ ॥ णान छोन छमान चळ्ळा व मानिरकन। विखान कांश्रेन जामु जामनकी दन ।। व्यथीत अराक कृत व्यथव हन्यम । বুক্ষোপরে শোভা পার কত পক্ষিগ্র ॥ কাক চিল কাকাভুদা নীলকণ্ঠ বক। কত আহি কপোত করিছে বক বক।। শালিক কাজনা সুরি ফিলা হরিডাল। मन्त्रमा वायुरे जामा छन्द्रमा रेवग्राहा ।।

भरमात्रांक्रां भागति कि वास्तरोति विष् সমূর চকোর শুক মুমূ ছাভারিয়া। ভরত বটর আরু মহার। গগুন। **टीमदांख পाशू**ड् हांडक हीतामन !! এই রূপ পক্ষীরণ ভাষে ভিত্তর। माशास्त्राटल मनियग्न मध्य गामाद्याः হেরিয়া নথের শোভা কার সাণা কয় . (यन क्यों हि इसुर सूर्य। इत्या ह जिया। ।। हाति वित्क वांखिएक कीहर ककरध्यु । अध्रष्ठाक करछान क्री (अनी (-नू ।) मामन मन्दिता तांभी ताटक तीना एकः । শন্তৰীয় করতাৰ আৰু জগৱালা।। কোধারণ্ড ক্রিটে কোপা গীত পার। আসিয়া বিবিধ তীর্থ যোগাইল ভায় :: इहेन भवित हैं हि शास्त्राक छ्टेस्ड। বসিয়া জ্ঞানকী দেৱী চান চাবিভিত্তে । चास्तामिका इत्य (मनी कारनन उनमा শ্ৰীরাম চরিত্র গীত কেদার রচন।।

সীতার অংক দেবগণের নিগু। রাগিণী মূলভান। ডাল কাওয়ালি। বল বল জীরাম নাম বদনে। বল বদনৈ বল বদনে। হবে চরমে পরম গভি, এড়াবে লম-নে। এতেক যন্ত্রণা ডোগে, ডবুড চেডন হলো- না। অসার সংসার এই জেনেও কি তা জানু না। হইয়ে মায়ার দাস, কর নানা অভিলাধ, না খুচালে কর্মফাস, কালের সদনে।। জুনা প্রারে

মনোহর রাসমগ্র প্রস্তুত দেখিয়া। রূতন আসনে সীতা বদিল হা সিঘা। द्रभा आपि (प्रवर्गालं काइन कथन। তোমরা হে কুডকার্য) হইল এখন। कथन भगन कह इर्ग मुख्यित। रथ रथ आक्र रेकरक रमात्र इटब्रक्स वाहिन्न ।। এখনি আপিবে সেই ব্যুদ্ধি বাস। রামের সহিত জামি করিব বিরাম।। যখন আসিয়া ইথে বসিবে গে:মাঞি मलत क्हेरव धना धना अहे हैं। है। আজিকার দিন ধনা ধনা ভিথি আর। তোমরা হইবে ধনা হেরিয়া বিহার ।। आभारत लहेश वारम विभावन द्वाम । ভখন বাহিব হয়ে করিবে প্রশাম।। গুনিয়া দীতার আৰু যত দেবগণ। कानकीत चक्र मध्या लिख रूप्य द्रम ।। বে অঙ্গ হইতে হয় যাহার উৎপস্থি। . भि हे जान भाषा रेहन खाशांत्र निवृश्वि॥ 📲 त्रश हित्रकृष्ठे रेणत्म कि मृत्मतः। . विज्ञास करवन जीजा मध्य व सेन्द्र ।

व्राम्बाम ।

গোলোক হইন্ডে শোভা কোটি গুণ ভায়। ৰত কোটি চপ্তা সুৰ্য্য গড়াগড়ি যায়। কিবা বৃক্ষ পরিপাটি কিবা স্থল জল। জিপুর্বে রচনা দেই এরি।সমগুল। লীরক মুকুত। আর মণিময় সার। চারিদিকে চকমক শোভা চমৎকার।। কোথায় জ্বান্ত যনি কোনখানে হীরা। পশিয়া কাহার দাণ্য জাঁখি লয় দিরা॥ মনত মজিয়া যার প্রাণ হয় নত। অনুযানি অমস্ত কহিতে নারে তত।। তবে রামচন্দ্র স্থান করিয়া স্থতিত। পুনক অন্তরে জানি তথার উদিত। द्वन्यारेश साह गुक्त नरनीवकाषा। **জানিতে না**রিল রাম <u>জানকীর</u> মায়'।। शृद्विक भर्वकृषित ना मिष उथन। উড়্ং করে ভার রাঘবের মনঃ 🛚। (वामन कवित्र) वाम ठाविभिटक छान। कांनकी नधान (फाँट्स्ट (मिंबर्ड ना शान ।। কান্দিয়াহ কন কপাল বিশু। ছঃবের উপরে ছঃব হইল দ্ভিণ।। রাজ্য নাশ বনবাল পিতার মরণ। क्ष्मर्ग रम भव रमान हरेन बाहरा। मुंकिव ब्रिकिटल युक्ति मिन मात्र। শ্ৰীরাম চরিত্র শ্রীত রচিল কেদার।।

जीदांगहराष्ट्रद (तामर ।

उोधिती हमिछ। जोन स्नन्य (उडान:।

या जिला रत विभिन्नारम् । शहात विवासी चार्का, कारु कि करत मार्थ । घडिन विश्वम मात्र अब स्मिनि निज्ञालाय, स्थास अबि हाय होया. कर काम ध्यान कीरम् ॥

ব্য ত্রিপদী।

विकरणाहर, ना (हरत नामन) का व्हरिया खानकीरद्र।

চজে বতে শীর, মনঃ মহে ছির্, কোণা বা যাবেন ফিরে:

কান্দিয়া কহিছে, জীবন দহিছে, কোথায় লক্ষ্যণ ভাই।

জন ন্তরপিণী, জনকন জিনী, কোথায় যাইলে পাই!!

काश करह मीटक, जामाध्य नानित्क, क्षिकारम ब्रह्म बरन।

কশাণ কোপার আসিয়া চেখার দেখা কর মদ সংন।।

রাজ্য গেল দুর, সে অঘোধ্যাপুর, ভাজিয়া আইফু বন।

(छामोप्तित भूष, स्टात दश मृष्, मणुबी महर स्थीतन ॥

बर्टे हिला मर्क्स, वा स्नावि कि होत् स्नानकी कांश उठिता। धानाय खानहि, कडरे बार्ना है. (छই वृश्वि भूकाई ला। এ কার ভবন, বিচিত্র শোভন, ् क्रिनिया आंटलाकाणुत्री। (कांश) ठिळाकू है,सपन सुकू है, 🖷 শোভা হেরিয়া বারি ।। আণের সোমর. শব্দ দেখের, आंत्रिया मिथात छाडे। क्षित (भाकामरण, भात । श्रीप क्रांग. वन्द्र किशास याहै।। नाहि, कान मुच, ভাগো মোর ছঃच, न्। श्रांनि निधन कछ। तांकपूछ हहे, वन मात्य तहे, ভেবে প্রাণ ওঠাগত ৷৷ ভাই আর জায়া, সব এক কায়া, ভিন্নভাব নাহি তায়। এ हिन दम्भी, छाई खन्मनि, কোথায় হারাতু হায়।। এकथा श्रमित्म, अंभारत स्नामित्म. श्रुभिक् । वाँहित्व नारे । नृशंहेरन कथा, कि वनिव छथा. क्लीनना। माज्यत ठाँहै।।

আরেরে লাজাণ, কেন আসি বন, পোড়াইলি লোকাগুণে।
কেদার কহিছে, জীনে দ্বিছে, রামের গোদন শুনে।

আথ মায়ালকাণ কৃত জীরানচন্দ্রের প্রবাধ।
রাগিণী ভৈরবী। তাল কাওয়ালি।
এত কাতর ক্ষেছ্ কেন রাম। রখুমণি, জ্বগং
বাহিত আছে তব গুণে গুণগাম।। ওকে গুণ
নিধি, বলি জ্বপারাধী, ক্ষে থাকি তব পদে সে
লোষ সইওনা করি। আমি তব জিন লাস,
আছে চির দিনে জাল, মুগণ মিলনে স্লামি
পুরাইব মনকাম।। গ্রু।।

পয়ার :

এইরপে রামচন্দ্র করেন রোদন।
দেখিবা আনকী তায় ভাবেন তখন।।
কে দিয়া প্রবোধ রামে বিশেষিয়া কল।
কল্পন গিয়াছে বনে কলের আশায়।।
ভবেত জানকী দেবী ভাবি মনে মন।
দেহের মারায় করে কল্পন স্কলন।।
জামিয়া কল্পন বার শ্রীরামের পাশ।
বলে আজি প্রভু কেন হয়েছু উদাস।।
আজি কেব দেখি হেন স্বিন বয়ার।
বনহ দাসের প্রতি কুপা করি সান॥

কাহার লাগিয়া কান্দ হের দেখ আমি : ° এই যে লখাণ আমি নিকটে তোমার 🕫 ्डामादि मिक्छे इंटे छामादि किस्तत । ্ভেমোর সেবায় যেন গাকে কলেবর :৷ ভোমারি লাগিয়া আমি বনচারী হই। कुभि तीथ (यहे कार**क मिहे कारक** बहे।। ভোষারি চিক্তিভ জাসি ভূমি মোর সার। সঁপেছি স্কীবন মনঃ চরণে ভোমার।। भारम् हि गांधनकार, उत्रभा त्व छात्रे । ছাড়িয়া ভোষার **সঞ্চ আ**র কোপা ষাই । তোমার জানকী প্রাভু ভোমা ছাড়া নর। ভুমি ভার দে ভোমার কেঃ; জার লয়। श्रीतामु नरमन नल स्काथाम स्नामकी। कामकीत उद्द कारे कृमिटर कान कि।। এই यে পाठाएन साद्य कतिनादत सान । বিলম্ব দেখিয়া কোথা করিল প্রান !! কোখার আইকু আমি গাই চিত্রকুট। काथाय आनकी भाव माथाव मुकुछ ।। क्ट्रे वा काहात भूती ज्ञान मत्माहत। मध्य भारताक रेहरछ 🛮 शुत्री जुन्मत्र ॥ কিবাসৰ ভব্দাণ কিবাসৰ ভাগ। পল্লবিত মুকুনিত সুংশাভিত ভাল।। वर्गमत्र भूत्रीवामि मत्रि कि निर्माण। 🛥 (यन क्राइंट्स्ट्र छाईं लिल्लाकं निर्वात 🛚 লেখেছি জনেক চাঁই লা দেখি এসন।
কে বৈলে গুলুৱা হছ বেদীর উপার।
কিবাকেশ কিবাবেশ রূপ মনোচর।
কলা কিবাবেশ রূপ মনোচর।
কলা বিনয়ে কর ভ্রম কল দ্ব।
কলা ইলো কেল গুণের ১ কুর।।
কে দেখিলে গুণালণ্য রূপ মনোচর।
কোলারি জানকী এই বেদীর উপার।।
কৈত বলি জন্তর্গনা হইরা লামাণ।
জানকীর জন্তে অঙ্গ লুকার তেখন।।
বিষয়ের বিশের গতি গুলি পরিচর।
ভীকেদার লাথ বসু রামরাম কর।।

জীরামচন্দ্র প্রতি জানকার পরিচর:
রাগিণী জয়জয়ন্তী। তাল সাঁপিতাল।

নাপার চিন্তে চিন্তামণি তৃমি প্রাণকান্ত। শাস্ত মুর্ত্তি ভ্রান্তভগ্লনের একি ভ্রান্ত।। মরিং একি ভাব অসম্ভব, কত ভাব মনে হতেছে উদ্ভব, এ ভাব ভাবিয়া নাহি পান ভব, কেদার কি জানে অস্তা।

जिल्हा।

जारमञ्जाहरू धड़ि, जाति स्वामकी विमन्न कृति, वरन सम्बद्धम स्वनम्बि। ्के (इ.जू. द्वामन कर्त, 🔧 अथन देशब्रक्ष ध्यू, আমি নাজ: তোনার রুঘণী। प्रवास्त्र द्वांका इत्या. विश्वित कि खालि नाम. निक काल मा लिमिटन वाम। ৯০ বৈর দংশী হই, চরণপক্তকে বুই, कुश्यमी स्थानकी भारत नाम।। अनरूमिनी आभि, जुनि (ह आमात सामी), पिनभिक्तित्त क्षाम। अरकता आमारत जानि, तिहे (व कमन औति, ঙুমি গেলে করিবারে খান।। ভোগার মানল মেই, সামার বাসনা দেই. ক্ষকতিথি দিন ওভক্ষণে। कक्षण करिया नाथ, जानिया जामाद नाउ, दिल बहे देखन चामरन ॥ मानीव खिल्लाय, कविशास बामबान. निद्वमन जुवन माहन। প্রতিধি শুভক্ষণ, আজি কর শুভক্ষণ, दिखद्र कंटब्रिक्क जारमाञ्चन ॥ श्रीगंग्रा द्वाचव कुन, जाशनि गामाना। नन, অনকের রাজলক্ষী সীতা। थानी बरनाष्ट्र बाहा, अथन वृक्षिणू छाहा, महा बर्फे मूनि बाकागीछ।।। (यमन करत्रक साण, (उमनि इहेरत द्रोम, ভাল তব করণা তর্জ।

 (कम्प्य अभन कृति, कि कड़िल नित्रश्ते) কাশীর গুমর হৈল জঙ্গ ।। किया छम किया खन, किया युक्त किया मन किन्। वाममधन मून्यतः विनिधारक माति माति, किवा शकी विनिधानि चर्तमञ्जू श्रुही मटबाहर !! बीवक बीटिए बान, मधुत मधुत उनि, नाहिएक नुकाकी मरनावदा। दिस्ति । किस्ता मत,
 पूर्व कीर्जि मरहारमत আনিলাম ভূমি পরাৎপরা।। आंतरी कहिए हारा, वर्ष किहू अवधाम, ভোমার চরণ ভিক্ল নয়। (राम क्यारक मिक्रान, तुन दश मिश्टामन, यमि औ शाम मिछ ब्रम्।। ও পদ ভাবিলে সার, কিসের ভাবনা তার, धन कान मृत्यंत्र मस्ता। শুনেছি নিৰ্মাণ পায়, এ অতি সামান্য ভায়, कि रुषु जानिया कुत इन ।। জ্লানিং ওছে রাম, চরুণে বহিয়া ছাম. গদার উদ্ভব হৈল তার। (क्वारत ब्रहिट्ड गीड, युक्ति विश्व प्रतानीड, नुक्वि इनिक्रम् द्राष्ट्र।

গ্রীরামের রাসলীলা।

় রাগিণী জ্য়জয়ন্তী। তাল ঝাঁপতাল:
কি শোভা গ্রীরাম বামে, সাজিল গরা নন্দিনী।যেন নবজলইবে, মিশিল কৌদামিনী।
সুশ্বনি সহ সুরগণ উপদীত: জ্বিগণ জাগ
স্কানকরেন স্বরিড।। জগতে যানক সবে
ক্রেবাস্তান্তিন। প্রণা

পয়ার।

এইরপে দীতাদেনী বিস্তর কৰিয়া। মঞ্চেতে উচিল সতী রাখবে লইখা। দেখিল আশ্চর্য্য রাম চৌদিকে তাহার। রামময় সঞ্জানি অতি চনৎকার ৷: १४ पिटक निवृत्य (पर्च (महे पिटक वृद्ध । বিষয়ে কইয়া রাম ভাবে অবিরাম 🛭 এমনি সীভার মার। বুনে কোন জন। कांकत इरेन छाति खीरधूनक्ता। অধিল ব্ৰহ্মাত সুরে যাঁচার নায়ায়। বুরিতে সীভার মায়। তাঁর হৈল দার।। विना (पार्य द्राच्य मीटा दा कन मकः ! **হেঁই মে ঘটিল এ**ত মায়ার সম্বন্ধ !! खखरद खानिया गर इट्या विकास । मर्थाए दिनस मनदृश्यद जनस् उपन कामकार्या जामरम लामिया। ় বসিব রামের বামে হাসিয়া হাসিয়া।।

পতির কমলপদে সমর্পিয়ে মতি। প্ৰয়েতে চরণপথা পুঞ্জিলেন সতী !৷ **ভবেড कमल शाम क**ब्रि नमकात । बिरवपन भिक्के आह आर नीय श्राकांत्र ।। এইরপ মনোনীত পু:জ্যা চরণ : खाउः भार खानकीत कृष्टे रेश्न मनः ४ विद्रारक कुछन निम महक्त छेलद । किया नवनीलकास्त्रि बीजाम भूम्बत्र ।। रामकद्र ध्रुक विकार कद्र गदः अश्वक हमनाभिक्त नीनकरनदत् ॥ চরণকমলে খেলে রবি আর শশী। विद्रारक्षन द्रामहस्य द्रष्टामरम द्र्या। ভবে নীভা স্মরিলেন পুর্বাদেবপণ: সীতার সারণে সবে আনক্ষে মগদ। বাহির হুইয়া ভব করে নানা মড়া এক মুখে বিশেষিয়া আনি কর কত।। हादिशिष्क मल्ज (विज्या प्रवर्गन। রাম রাম ধনি তারা করে অমুক্ষণ।। अक द्राम नारम करन हजूर्वर्श कन। कानिया निदर्भ क्रम (भरका भक्ता।। এ रत्न छेहाद्य हिंद ऋल्पित किन्ना। नवपूर्वामनभाग छक्का वतन ॥ कि तारमद लाम्लम किंदा इति क्ता। পর্ম ঞ্বের নিধি পর্ম সুন্দর ।।

জাজি কি পরম ভাগা হের দেখ রাম।
নয়নে দেখিত্ব গোরা নবঘনশাম।
যেমন সুন্দর রাম জানকী তেমন।
কখন নয়নে মোরা না দেখি এমন।
শ্রীর শীডণ হৈল জুড়াইল আছি।
ইফা হয় জদম মাঝারে গেঁথে রাখি।।
এইরুংপ কছে সবে আনন্দিত মনঃ।
ব্যেরাগণীলা গীত কেদার বৃচন।।

नील। गरु वाम 5 सारक प्रवंशित छव।

द्राशिनी कांग्रक महो। जान गाँशिजान।

किन गैंशि कुं ले छत, अश्र तच्च मिने ताम। अभीशेती ताकी होते, नदमूर्वा प्रमाणमा।
अश्र श्रेण्यां १४२ती, अश्रमम मर्शहोती, जूदरन व हिज को ही, गर्वक थें। अश्रमम मर्शहोती, जूदरन व हिज को ही, गर्वक थें। अश्रममा। अग्र प्रवाति नामक, गर्वमा में छा छोवक, नीजां सनः (जाव-क, टहें जा कमारत वाम। अस।

श्रमात।

সহস্রবদদে মহাবিষ্ণুর উদয়।
শঞ্চক্রগদাপঋধারী দয়াসয়।।
ভকতি ভাবেতে পারে মুক্তির বন।
সীতা সহ রামচন্দ্রে করেন করেন।
নমামি জানকীনাথ প্রণমামি সীতে।
বামনা আমার খনে চরণে পশিতে।

वर्रायक कक्षणी कद्र खिमद्री हस्तन । म् अर स्ट्रांस्ट्र (प्रदेश अर हरेना कहिरम खेरপखि (षष्ट्र स्टिह हटेएछ। । ভোমাদের ৩৭ আমি কি জানি কহিতে । এই क्राल महाविक् कब्रिट्स छन। ভখন হইণ ভবে বিষ্ণুর উদ্ভব 🛚 । মহাবিঞ্ মত তাৰ করিয়া বিতার। প্রশাস করিয়া পদে হন নিরুত্তর । **७८२८%। आहेल तुका महञ्जतम्** । নক্ষেতে চতুরানন সাধিত্রীরমণ 🗤 (यां छहर ख कुरे खारन कुरेखरन शृंद छा। বিক্ত অ**স্থল দিল** চরণ অ**স্থ**জে :! दरन इंक्सनाकास त्रचूमिन दान। अखरन कक्षा कर्त्र जिखरनद्र शह ।। ভোমাতে উৎপত্তি সৰ ভোমাতে নিবৃত্তি। সেই জন ধনা যার তোমাতে প্রবৃদ্ধি।। ঋন গো জানকি ভূমি জনকের সূতা। मर्ख (लाक मृत्रश्चिष्ठः) मर्खश्चगतृष्ठः।।। नर्क निश्चि अमामिनी नर्क द्रभम्मी। नर्सकान दामखारी। नर्स भक्त खरी।। সর্বে ঘটে আছু ভূমি সর্ববন্ধনগার। भर्वरामस्य श्रृष्टा करत्र हत्रन रहामात्र ॥ अं रिक बन्ना यनि इहेन मीत्र । **बकामनः क्रम का**णि (मबा मिना मध्याः) ४

तामद्राम !

• क्लारन अर्फ्क मनी निद्र छंडी छात्र : দীপচর্ম পরিগান স্বর্য্যের আকার।। গ্লায় অন্তির মাল কণী সুশোভন। য়েড্হাতে সীভারামে কলেন শুবন।। न्दम। न्दम। ताभाष्टक व्यक्तित श्वि। ন নজ্ঞে জানকি দেবি বহু গুণবঙী।। कि स्नानि महिमा मीमा कदिए दर्शन ; প্রদ্বিলা মোসভায় ভোমর: ছুক্তন 🛭 क्य नम्र अप्तर्गाप किन विखत। তখন আইল ইন্সু দেবের ঈশ্বর।। প্রণাম করিয়া স্তব-করে নিপিমত। এক মুখে ভাছার বর্ণনা করি কও।। अक्रार्थ कवित खब डेखा बङ्कात । ভবে আসি প্লণীমল দশদিক পাল।। वरन रह जानकी शक्ति जिल्लारकत्र जूल। কে আছে ভুবনে আর তোমার স্বরূপ 🛭 স্ঞান করিলা সব তুমি রখুবর। সর্ক লোক হিডকারী কুপার সাগর। खाप्र खनेखना खनएछत् धन।। ক্সয় রাম নিজানিক অধন ভারণ।। ক্ষগতের কর্ত্তা বহু জগতের সেবা। ভূমি জান সকলে ভোমারে জালে কেবা।। প্ৰবন্ধ বোডহাতে বস জাসি কয়। উভরে মিলিয়া দেহ চরণ উভর ৷

लानमानि हर्ने शक्का ख नरह राम। मर्क (पर्क लाइ कृषि मर्क ७१४) म মমত্তে জানকি দেবি জগতের মাতা। বৰ্নিতে তোমার গুণ না জানে বিধাত: !: अक्त विशासमा हा आस्त्र कहेला नी हतः ष्याभिग रेन्य जिन्न कदित्वन सर्।। नत्या नत्या दायहस्य यहानकी शीखाः আপনারা জগতের মাতা আর পিডাল প্রসাব করিল। সর দেবভার দল। ञ्चलना कुलाग्न (मह हदन कमन् ।। न्त्रानं कर्यम् स्परं हरक नरह सीत्। नगाप्र উख्दीनाम लाभाक भनीत ॥ नता (र खानकी পতি खानकि खानहत्र) 🛎 তত্ম বিক্রম জামি করেছি তোমায় 🗉 ভোষারি চিহ্নিত জামি তোমারি কিন্ধর। (मर्थ (यन ज्ञान) मारभट्टा त्रध्वत्र।। नाम रेक्स न्तरवन् विस्तृत् स्वदन । आशिका अन्य छेन्नका न भवन ।। কুনের প্রাবিয়া স্তব করে বছতর। (माडिक् इडन्नेक्ट्ड कटन्द्र ॥ करे कला मिलाल दामखन श्रीष्ठ । ভখন ঈখান সাসি সমুখে দাঁড়ায়॥ वमस्य वयभ तथ कावि पृत्र्षृत्। ध्यदान (भागिक किया पूजुबाब कून ॥

अन्य जाना

. রলদেশে গোভিড ভুঞ্চ উপটিতা। ভিজ্ঞিলাবে পূজাকরে রাম স্বার থীতা।। राम कि श्रीहरा जर सरह अवधाय। नुत्रम धनम रम इन्द्र साम श्रीम ।। কি দিব ভোমার তুলা ব্রিজগতে নাই। প্রয়েখ পঞ্চ ভাবে তব এব গাই। विका अभाव उर एक भारत किटला মোলিতে ভক্তের মনঃ আইলা মহীতে 🗆 এট দ্বাণ পঞ্চয়ু শ কভিল ভৈত্ব। उथन का भिया बन्धा शुन्द करत रहत ।। र भारत कार जो महत्यु एकर न दशे रूप । ভব নাজিপন্ম হৈতে জামার জনম।। জাগড়ের পিভাষ্ট হাবে বলে সব : কিল্ফ মম পি ভাষহ ভূমি হে রাধ্ব।। व्यमल वर्गमां करत ब्रुका ख्रेन्सम्। আনিয়া অনস্ত দেব কৃত্রিল প্রাণাম।। £हेक्राश कारम जारम जाहेश कछ स्रम । কি কর ভেত্রিশ কেটি দেবের স্তরন।। গুনিলে অধন্ম বল্ডে পাপ যায় দুর। রামের চরিত্র কপা বড়ই মধুর।। युष्कि मिन भूकवि द्रिमिक हस्त द्राग्र। विक्ति (कमायमाथ वसु डिलावाम्य ॥

জীরামচন্দ্র প্রতি এইগণের স্তব।
জয় জয় রাম, জয় সীতারাম, বলবে বদনে।
জনালে ইইবে মুক্ত এভবেন্ধনে। রাম ভজ্জ
রাম চিন্ত রাম কর সার। নিগানে জীরাম
বিনে গতি নাহি আরে। জনিতা, কি কর
চিন্তে, যদি রাম পার চিন্তে, নাহি যেতে হবে
জন্তে, শমন সদনে॥ গুলা।

वपू जिल्ही।

করি ষোড় কর, কছেন ভাকর,

ফরে মধুকৈটভারে।

লম্মীস্থর রাশ, সর্ববিধাশম, সর্বাহনদ ভেমুরারে:।

and the control of th

्र (नज्र रेइएड ७४, रहेचू क्रेष्ठर,

🕛 স্বৰ্গ ভ্ৰমিডেছি আরু।

দীপ্ত করিতেছি, সহী ত্রনিতেছি,

७व शरम नमका है।।

কৃতাপ্তলি হৈয়া, শির লোভাইয়া

करवन ह्या खबन।

(इ ताम द्राघर, नक्क देहरफ छव,

করি মুজন এহণ।। হয়েছি সুন্দর, জগদনোহর,

ভোমার কুপাত্সারে

জপার মহিমা, নাহি দিতে সীমা, প্রশাম করি ভোমারে ট

চিত্ত পূল্কিড, ভাবেতে মোহিত. मझन कटतम छन। कनिकीद्रभन, ब्लीद्रचूनव्यम, কুপাম্য হে রাখ্য : भ्या अ कृथ्य, याभान जेलत. েভামার কইল বাস। ও পৰে প্ৰধান, কবি তে জীৱান. জাণিতৰ নিজ্ঞান ৷ निमुक्त कम, - (इ ह्यू हक्स म, কে জালে ডাই ভোমান। ় কি স্তব করিব, সেক্র হৈছে ডাল, किया लिए। सामात्।। बीत के मनांडा, हिन अक्रमंडा, খাহার গুণ কহিছে। उनम्र छैं। हात्र, कि ट्विट्स छात्र. প্রণাম করি পদেতে।। কৰ বৃহস্পতি, অন্ন রঘুপতি, সভাওপের আধার। खरणय नीतः (डांमाव।। চজুৰ্ব্বৰ্ণদাতা, বিধিত্ত বিখাভা, अभाग कति आवाम। त्नारंत निरुखत, दुक्त त्रधूतरः, महानु जानकी बाम ॥

ভবে শুক্রা কন, হে প্রলোচন, ' वामाकांख (३ द्रांचर। रमरदङ् व्याधात, व्याधात मुश्रात. कि कर छर देश्कर॥ এক শতবার, চরুর্ণে ভেরমার, নুম্পা**র আমি ক**তি। जिल्लाक क्षेत्रत, स्मारत कर्का कत, চিহ্নিত আমি বে হরি !! कम मदिनकतः ् द्रध्राराधवतः श्र शहर खाः न्यार्मा छ। এই গণপতি, মানামান অভি, इरम कर व्यारमरभरक।। सम्म मृङ्ग छत्र, नावि नती मन्न. ্ প্রার্থনা করি এখন ১ नमा नर्ककरन, अतिकारितरन, খাকে খেন মেবুর মনঃ!! कति (बांफ्भानि, जोइ कटर रानी, नमा दाय खराक्ता। यत्व (मनामूदन, मिश्रन मिश्रूदन, कदिश दक्ष यजन।। তোমার ঘর্মেতে, যে সুধা তা হতে, क्रिशाहित ७४न। त्र मुधा बाहिया, जमत स्हेया, তোমাইর করি ভল্পন !!

छाडून रिक्टरें, . कि कर रम मय. धना मन् जुमखरन। ধেন মনভূজ, নাহি ছাড়ে সজ, ख श्रेम श्रेष्ठकारमा ॥ क्रि (यांफुशानि, क्रिकु करह वानी, यात्र तरत क्रीतन। ভাগৎ পর্যান্ত, ভোমারে একার, করিব আমি সেবন।। সহস্কেবার, লক্ষ কোটি আর. जामका कहि क्यांगाम। दक्का कह मीरम, शामद छाधीरम, রাশ নব্যন শ্রাম ।। লীরাম চরিত্র. পরম পবিত্র, अनिटल भूगा छेत्रम । অহত নমান, সাধু করে পান, **জীকেদারনাথ কয়** !!

শ্রীরামচন্দ্র প্রতি মুনিগণেয় স্তর: রাগিণী ক্ষয়ক্ষয়স্তী। তাল বাঁপেভাল।

হে তপৰকুল উজ্জ্ব রাম রাজীবলোচন। শান্তমূর্ত্তি ধান্তহারী, ব্রিডাপ ভয় মোচন। পুরুষ প্রধান কয়, বিশ্বপতি বিশ্বময়, সনাতন সর্বাশ্রেয়, ব্রহ্ম বেলের বচন। প্রীপদে গক্ষা উৎপত্তি, শিলা হয় মানবাকৃতি, কেদার-নাথের গতি, ঐ রাঙ্গা শ্রীচরণ।।

भेषांत :

जिल्ला जोरद शुनिनेन करत्र खरन ! सरमा नरभा तामहत्त छ नन्तिवस्य ॥ " সর্ব্য শাস্ত্রময় ভূমি বাগ্রে ক্রিলোকেডে।। হয়েছেন প্ৰতিগন্ধ বে বস্তু শ্ৰুতিতে : भक्तिमानमा ब्रक्त विजु भवाष्ट्रमा। সকল শব্দের প্রতিপাদ্য ডিলি হন।। তার প্রতিপাদা প্রস্তু হইয়াছ ভূমি। নির্বাান্যারক স্বর্ণ রসাত্তর ভূমি । নিভ্যানন্দ নির্ফিকার চরণে ভৌমার! 'অসভাং নতি ম**স সবাকার** 🖟 নাবুদ কহেন সত্য স্বরূপ আপেনি। ক্ষণতের রক্ষাকর্ত্তা সত্য শিরোমণি।। সভারপ সমাতম চিন্তার শ্বরপ। সভা ব্যক্তি জন ভার সভোর স্বরপ । এবস্তুত ব্রহ্মময় ত্রিলোকের স্বাদী। 'প্রপদে প্রণাম তব পদাব্রিত আমি।। वान्त्रीक करहन एह ब्रांघन बन्त हिन ভোমার যে নাম ভাহাবিপরীত করি !! জহর্নিশি রাম রাম করিয়া ক্লপেছি। নামগুণে সভাব্ৰহ্ম প্ৰাপ্ত যে হয়েছি।।

মহাপাপী দন্মকর্মা ছিন্তু ছরাচার : •হইতু কুডার্থ নান্যাহালের। ভোমার।। যদি তব নাম আমি প্রকৃতরপেতে। ঞপিভাগ রাত্র দিন ভক্তিভাবেতে। কি পর্যান্ত হৈত তাহা বর্ণিতে নারিছু। হৈ প্রভূ আমি যে তন আগ্রিত হইসু। রক্ষা কর মোরে জামি কিন্তর ভোমার। বিষ্ণ্য চরণপথে করি নমস্কার।। ধরণী লোটীয়ে কন বশিষ্ঠ ভালেন ! ভূমি রঘুবংশের নায়ক সুরগ্রন।। বিনাশকার্ক নিডা সভা সনাভন। তব্ গৃক্বপুরুষ আছিল যত জন।। পুরেছিত ছিক্ত আমি ভাল সবাকার। कुभा कर कद शहर कवि समजात ।। এই নিবেদ্ধ করি অভিম কালেতে: ञ्चान पान पिछ त्रांको हत्रशास्त्राण्ड ।। नामरमत कम गरमा द्वाचा हापूरत। কে জানে ভোমার অন্ত থেলে অর্গেচর । विमालवामीता बचा कविमा वटनन। তার্কিকেরা পরব্রহ্ম করিয়া কছেন।। বিশেষবাদীরা যত প্রকৃতি কংহন। সাৎখাবাদী মতে পুংস করিয়া বলেন । পাতপ্রলবাদীরা যে বলেন কারণ। বীমাংসক মতে ঈশ হুগত ছার্থ।।

क महम्मजनाधी मक्टल जर्मग्र । (७: मात कि क्रथ छाड़ा छिव गाहि इस ।) আমি কি কহিব মোর নাহি কিছু জান। প্রাসর হইরা যোগে কর পরিজ্ঞাণ। প্রম পদ যে তাহা করত প্রদান। व्यानात्क । भागानात्क मिन पादि स्थान । ष्वराखा मानन अप्तु शुक्रम अभाग । ভূমি কর্ত্ত কর্মা হে করণ সম্প্রদান ॥ व्यापानि मण्डा (ए व्याद्यम् व्यापादः । তোমারে এরপ জানি করি নমস্তার। ভরডাজ কর ভাগে ইইয়া মোহিত। লখার জীড়ার স্থা শস্ত্র বন্দনিত।। 4বস্তুত গাদপন্ম করি ছে ভজন। দিবানিশি ভাহে বেন থাকে ভুঞ্মনঃ !! तकाश्वक त्रजामग्र करः कराव । ত্রতাপদ চারি বাব ভজনীয় হয়।। চারিবার বলিবার তৎপরাতা গুন। ভর্ম্বা**জ তপো**ধন নির্বিকারী হন।। নিরাকার মাকার করিয়া এক মত। ভক্তি ভাবে মুপক্ষেতে কৈব দশুবত।। থাকার রূপেতে তিন ওপে তিন বার। নিরাকার ব্রক্ষে একবার নমজার।। **এ**ই চারিবার ভ**অনী**র সারে।দ্ধার। **भरत्य प्रति जानि खर किन जा**रि !!

ত্র রাঘর মোর নাম প্রভন্ন হর।
উচ্চেম্বরে আনি কর নামাক্ষর কয়।।
উচ্চারণ করি প্রভু নন্দর সহিত।
আনি হে ডোমার ভক্ত ডোমার রক্ষিত।
মুহামূনি, সৃতীক্ষ যে করেন আসিয়।।
তর পাদপথ অণু নল্পান করিয়া।
তরেছে আমার ভাছে শ্রু শ্রিশ্ব মতি।
যে উচিত হয় ডাহা কর রঘ্পতি।।
এই রূপে ক্ষমিগণ করেন স্তর্ন।
শ্রীরাসচন্দ্র প্রতি গ্রুহ গ্রমাননের স্তৃতি।কা।
শ্রীরাসচন্দ্র প্রতি গ্রহ গ্রমাননের স্তৃতি।কা।

শ্রাধিণী ভৈরনী: তাল টুংরি।
তে জার নীজোপতি রাম। দুবর্গাদশাসাম।
ক্ষেম পাশান সংস্থার কারণ, অথম তারণ,
সর্ব্ধ জনগম।। ত্রিভাপ হরণ, বিপদ ভঞ্জন,
শীমধুসুদন, কুপার্ময় নাম। গ্রেন।

পয়ার।

শিবসুত গঞ্জানন জাসিয়া তথন।
করমোড়ে রামচন্দ্রে করেন স্তবন।
চিত্রকুট শৈলোপরে শ্রীরাসমগুলে।
নমস্কার করি তব চরণকমলে।।
চেরাস সকল বেদে কন যে ডোমার।
চরণমহিমা বর্ণ সকলের পার।।

भास्त्रक्तिं नवनुर्वानवभागि कास्ति। **७कि कति नाम नित्त इस प्रश्व माछि।** कृषात्र निधान कृषि शुक्का भवाकात। পারম পুরুষ পুর্বব্রগা অবভার॥ कि छानि उम्छ अन् अन्छ ना आदिन। महारयां की रयां रश्यं कर्ण भाग थगरन । क्व जिन्न कात्म महा डीर्थ का नी नाम। ভথায় মরিলে জীন পায় ফোক্ষাম !৷ उद नाम बन्नमञ्ज नित (मन करने ! निर्काण मुक्छि मान एमन नक्षं वर्ल्॥ নামের মাহ্যা কিবা কর সীতাকান্ত। ধিঅকরে কত সুধা করে অবিপ্রান্ত ।। এত বলি সিদ্ধিদাত। স্ট্র নীরব। গুহ আসি ছয় মুখে করে বছ তব।। बर्म। द्वार नांदाद्वर नदसीलकांद्र। দেবসেনাপতি আমি তোমার কুপায় 🖰 ভাগকে বিহুজোপরে করি আরোচণ। যথা তথা ভামি নাম করিয়া মারণ !! ভাহে মোর কোন কালে বিশ্ব নাহি হয়। ধসুর্ববাণধারী হয়ে দিক করি জন্ম।। ত্রিলোকের প্রিয় আমি ভোমার প্রসাদে क्नारंत्र क्रिंदर क्रमा ह्वनथातारम् ॥

শ্রীরামচন্ত্র প্রতি লক্ষ্যী আদি দেবীগণের স্তব '

রাগিণী আলিয়া। ভাল ছত।

তে কদুলাক্ষরাস, ভাতুক্তর নিবারি। ভাত্কুলোক্ষর বিশ্বপতি তবেবের ভাকারি।
তুমি হে করণা সিল্পু, দ্যান্য দীনবন্ধু, বিজরণে কুপাবিন্ধু, প্রকাবেনা সিল্পুণারি।।
ন্যাতি পাত্তরী অন, নালভতে ভীত মনং
দেকি চন্ত্রণ শরণ, ক্রিভুবন মনহারী।।
প্রাব

মতাশ্বনী দেবী কন ও হে চিত্রগামী।

দিন্তাৰ প্ৰতি হততে প্ৰেতিত হৈ আদি।

উংপ্তী হৃহয়ছি পেই সীতা প্ৰিয়া তব।
তোমার যে রপ ভালা আমি কিবা কব।
চঙ্গানিকটে স্থান দেহ হে আমারে।
কিম্পিক আর আমি কহিব তোমারে।
শারদা কহেন হে আন কীকান্ত রাম।
তোমার কুপাতে মোর বাগ্দেবী নাম।
ব্রহ্ম প্ররূপিণী বেদমাতা হইয়াছি।
দীতা ন্যভ্ল হৈতে আমি জ্বিয়াছি।
কুপা করি দেহ মোরে চরণ প্রণ।
ইহ্মবতী হরজায়া যোড়হাতে কন।
দীতা অঙ্গাহৈতে জ্বাম ব্রিয়া এইণ।।

জাদ্যাশক্তি হয়ে জাদি ব্যাপ্তা ব্রিসংশানে।
তোমার ইজাতে নব কি কব তোমারে।
কালিকা জাবিয়া কন ভয়ন্ধরা মূর্ত্তি।
হে রম্বুংশের প্রেপ্ত ডোমার যে ভক্তিনা।
ভালা জামি কিছুই না জানি সারংসার।
ব্রন্ধাঞ্চের পতি রাম মহিমা জপার।
কপাতীত ব্রন্ধম বিশ্ব চিন্তাস্থি।
সর্বজীবে সম দয়া যোগ শিরোম্বি।।
নবীন জন্ম রাপ জগতে পুজিত।
জামি যে নিভান্ত প্রভু তব প্রাজিত।
ভৌরাম চরিত্র কপা শুনিতে মধুর।
কেদারনাথের প্রভু ছঃখ কর নুন।।

শ্রীরামচন্দ্র শ্রতি গন্ধর্ম ও সিদ্ধ ও চারণ ইত্যাদি গণের স্তর।

রাগিণী বেহাগ। তাল জলদ তেতালা।
বছুপতি, আমি জতি, মুচুনতি, জভাজন।
হে জানকীবল্লভ, হে দেব ইল্লভ, রাম পতিত
পাবন॥ হে ব্রহ্ম পরাংপর, হে জগদান্তর,
নীলকদেবর, ভূমি পরম কারণ॥ হে ভবভারক, হে শুভকারক, হে গুঃখ হারক, শমন
দায় নিবারণ॥

जिल्ही।

हराय गांडा श्रेत्रांष्ठ्रं, कहिर्द्ध श्रेशुर्व्द श्रेर নমোরামচন্দ্র বিশ্বকৃপ। ञूमि गर्री मूलाधात, निर्माटमध निविद्यात, एपि मान जिल्लाका छल। नं क्र्यट्राता सत्याष्ट्र. अड बर दिन टिक्ट দ্যান্য কর পরিত্রাণ। भवरमाक धीर्थ करन, अ शका हत्व करम. मिल चामा भवाकरेखा छात्र । शिल्ला वां एका व, श्रामित्रा दिनश करत्, 👡 মুক্তকণে স্তুভিনাকা কছে। त्रायार शिक्य थन, कर्ल भरन भूमह शुम्ह, দি**জ্বভাতি জে**সিজ খে নছে।। : एटर इ देवदि ना गिटंड, अन्डीर्न शृथिवीटंड, नद्रश्लम शुक्रम धार्मान। (वांनीत अभग ६८४), श्रेष्ठभक्त तस द्राप्त, किया गीनां कृत छन्नाम ॥ कहिएक् ठांत्रवर्ग, नत्मा ताम नांत्राज्ञन, द्रमाপতि सूर्यावः नथद्र । এলিবাস জনার্দান, নরেশ রযুবস্থন, ्कानकीत्रमनं त्रध्वत्र !! उद बादम दाध हिन, अश्चि म्लाम क्या श्वन, সেইম্ভ পাপ দগ্ধ হয়।

HIMBITT

নাথের মাহাস্থা ৩৭, কৃষ্ঠিতে নহ নিপুণঃ, महस्रमात्र प्रशंस्य ।। কিয়ারগণেডে কয়, নানা রাল ব্রহ্মসায়, · জসন্ম প্রণাম ঐচরবে: আমরাপামর অভি. অভাজন মুট্নতি, পরগতি সদ! চিস্তা মনে। हच्दरण (अह जूमि, जाकाण पांचाल फुनि, ভৱ গুণ কহিতে কে পারে। প্রভুহে সরগ তব, না জ্ঞানেন বিধি ভং. आगदा कि शांति विविवाद ॥ हरज खारत शमशम, हिन्दा कहि सन्छि अम. কহিছে নফত্ৰেগণ বভ। मङ्कार जीर्या. अधारकत (विमकारया. इने त्याना क्रिम्खरणा শ্রীচরণে নিরস্তর, শনঃ থাকে রযুবর, क्द्र क् जाडवा छिक मान। **डी**टकप्रांचनाथ वरन. ७ भगरत्राक्ष**ः**त, अञ्चलि भारे (इन श्रान !!

ब्बिडामम्ब्यु श्रीक कीर्यगरनत खन। द्रांतिनी रदेशंग। कांग किरम क्रिकाना। त्रोमधन स्थानीत धन क्रिकानात्राधन, स्व क्रिकि स्थिति, श्रीनम्न कांत्रन हम।। बाह्य विधि हत्, ধায়ে নিরস্তর, দেই পরাংশর ভুমি তারে ভার মন। গ্রহা।

भग्रात ।

इक्सांक्रवी यदसम नदभः नश्रील द्रोधव । कर भाषभंश देहा हरे सु केंस्टर ।। नकः मारम सुदिया। जा मकल मर मारकः। मुक्ति मान कहिटकों इ मर्न्द्रमा नराद्य ॥ আমি কি বলিব প্রভুষে রূপ ভোমার। ৰবৰীলকায় পুৰ্ৱখা ভাৰতার :: ভৌপল্যাভনয় জগল্পস হিভকারী। সংজ্ঞাৎ পরম ধর্ম লোক দর্পগায়ী । দেবারি নাশিতে জনতার্গ ভূমগ্রে। ध्धनमामि भी छा शु ि ठद्रनक्षरम ।: পাতকী নিস্তার হেতু নাম চমৎকার। বারাণসি আসি স্তর করিতেছে আর 🛭 বারাণিনি নামে আমি বিখ্যাত সংগারে। ভোমার মহিমা প্রভু কহিতে কে পারে।। ७व भाग উপদেশ कीत्रात क्रिया। করিতেছি নিন্তার নির্দাণ মুক্তি দিয়া।। জভ এব আমি ভোমা করি হে ভজন ! Bরবে শরুণ দেই खी**রভুনন্দন** ।। প্রমাগ করেন স্তব জীরামচরণে। क्षप्त ज्ञांग काम ज्ञांग विशासिकारनः॥

ভোমার যে নাম উপদেশের কারণ 📖 ভাস্কর সর্বদা হেখা করেন প্রন।। এই হেডু মুজিদাতা হয়েছি আতু আবি : বা জানি ভগন্ত প্রথমামি সাভাস্থামী।। মায়া কৰ হে নাগ হে নীভাপতি রাম। ভোমার মায়াভে ধরি মায়াবভী নাম 🗓 ভীৰ্থ সকলের শ্রেম আমি হইভেছি : অণ্ডানুসারেতে মুক্তি দান করিতেছি । किन्तु जुमि भारत द्वान (पर ७ ठत्रत)। मितानिभि शामशंघ कारश (यन महात्। প্রণাম করিয়া কাঞ্চি কন ঘোডহাতে: হয়েছি কাঞ্চনবতী ভোমার আজাতে এ যে বাজি এ স্থানে মরে কাঞ্চন রে হয়। আমিতিক প্রসন্ম হয়ে রঞ্জয়াময় ii পুস্তর কহেন রামচন্ত্র প্রণ্যামি। সব ভীর্থ মধ্যেতে পুষ্ণর ভীর্থ আমি । ভোষার আজ্ঞাতে আমি জীবেরে নিস্তারি গুদান করি হে নদা নির্বাবে বিস্তারি॥ 'ৰৰ্মদা কছেন বিভূ ভূমি পূৰ্ণব্ৰহ্ম। আমি তব আজ্ঞামত করিতেছি কর্মা। कीर मकरनात्र कति कूमन ध्यमान। এই হেড় নৰ্মদা হইল মোর নাম ! আমি পাপরপা করি ভোমারে প্রণতি। क्रिगानवरन औक रहत रह मध्यां है।।

कव्छिन खेत्रमञी अमारम छामात । হুইয়াছে নিজাণ সলিল যে আমার।। याकात छेन्द्र काम शाक्षम काम्या কার মহাপাপ নত কর্য়ে ভার্থ। डंकाइड्डा आपि लाल गत तस्ते करता অতএব আমি নতি কৰিকে সন্তৱে॥ शंतरित काक्ष्य (त्रा काङ्न समून)। ममानव यना आभि लाजि मुलकना । निर्मात व क्षम मम (यव) भान करत्। সপ্ত মাধ । স্থৃতি তার হয়ত উদরে॥ মিখাার ধ'হত শাল যে সকল ভাচ।। শ্রুত করি আমি ভার পাপ মহা মহা।। একণে ভাষাকে আনি জালিবার তরে। धत्रभी का द्वेतरिय कवि व्याभीम मञ्चरत्र ।। नागाविश खत श्वीम करत छीर्थनात। खीवामहिद्रा औरकमाद्रनाथ करन ॥

শ্রীরাম প্রতি পর্যবভগণের স্তব।

রামনাম কর দাব । অনিতা বিষয়চিতা করো লাক আর । অনাতা শাস্তা অন, দারা সূত ত্রা-ভূপণ, মায়াতে বল আবন, কে ভোষার ভূমি করি।।

প্রার ।

স্মের করেন স্তল চক্ষুনীরে ভাসি। ৰমত্তে করুণাময় রাম গুণরাশি।। खर भमत्रकः म्लरमं आमात्र खेलंत। নে পুণ্য প্রতাপে আমি হয়েছি অমর।। छ्कु चूरा छ।त सूद्रशंल वीस कत्त्र । সহিতেছি সেই ভার পুলক জন্তরে॥ ও চর্ণ সরোক্তে প্রণতি বিস্তর। সর্ফো আমারে রক্ষা কর রয়ুবর।। কহিছেৰ হিমালয় করিয়া ভকতি। পাদপথা পূজা করি যেমন শকতি।। ভাহাতে করিয়া তব করণা বিহিতে। হয়েছে আমার গৌরী হেন সুত্রহিতে।। ত্তব লাম ভজানেতে হয়েছে এ ফল। ভোমার প্রসাদে মোর নাহি অমকল।। ভবে বিশ্বা যে'ডুকরে করেন শুবন। প্রস্তাহ ভোষারে আমি করি হে মারণ :। ভোমার মায়াতে শৈলরপা গিরিকক্ষা। আখাতে বিহাল নিহা করেন অপর্বা।। कहिरका ह शिनस्मापन ध्राध्र । হে অপদান্তর আমি ভোমার কিন্ধর।। হয়েছি সকল ঔষপির সে আখার ! ইমি নাথ বিশ্বাধার রক্ষ ত্রিসংসার।।

ুক্তি হে প্রণাম আমি ডোমার চরণে। खकिक्षेत्र **क**रन (इत कक्षणी नग्राम ॥ ভক্তিভাবে মলয় কহেন যেগড়হাতে। হয়েছি দুগলিবুক ভোষার কুপাতে।। ু সুগন্ধি চন্দদ আর্গি করিয়াত আরি। তুলসী চরণপথা শ্পাশতে আমার।। ভাহাতে মুকতি পদ ধন্ম দীতাপতি। **७ हत्व विद्या श्यात राज्य माहि श्रेलि ।** रेमनाक रत्तम अञ् कति नग्रकात्। পাৰ্বভীৰ ভাত আমি বিহীন্দ্ৰকুমাই ৭ বুলাকাংকী নাথ হে পরণাগত আমি। ছুনুকুৰ হও মোলে জগতের স্বামী॥ তুমি বৰ্ড ভূমি কৰ্ড্য ভূমি সে বিধাতা। ভূমি ঋণ ভূমি ভপঃ মোক্ষকদাতা॥ ভূমি হে ফুজনকারী প্রলয় করেন। সম্বর্জাঃ ভমঃ গুণ ভোমাতে ধারণ !! িকি আর কহিব আমি পাষাণ্যুবতি। नर्वकार अहित्र शास्त्र यन मिछ।। রামপদ পুজি শৈলগণে আনন্দিত। শ্ৰীকেদাৰনাথ কহে শ্ৰীবামচবিত ॥

শ্রীরামচন্দ্র প্রতি গরাসুরের তব । জয় জয় রাম জয় সীতারাম, রাম রাঘ্র হরে। ঞ

প্রার ।

এই কপ হটতেছে কংখাপকগ্ন। উপস্থিত গয়াভীর্থ সংখ্য পিতৃগণ ।৷ ध्ववृक्त इत्लम खुक्तिशाटी मरनावरम। नमकात कति ध्यञ्च (रुत्र क अधरम।। আমার মন্তকে ভব যুগল চরণ। ध्वमान करवृद्ध द्वाम क्मनरक्षांहन ॥ সেইত তেক্ষেতে করি তব পিতৃগণে। ভরাইতে পারি কৃপা কর দীনজনে 🛭 नभा नभा निश्र शक्ति नभा द्रश्रद्ध। नमस्ड शूक्रशासम् द्वाशानदारभद्र ।। ধক্ষ মৰ্ক্তাপুরবাসি পুণোর প্রকাশ। গোলোক ছাড়িয়া অবভীৰ্ণ শ্রীনিবাস ॥ ' ৰুল্যান কুশলে লোক বঞ্চে পূর্যন্তিও। ব্ৰহ্মপদ দর্শন পায় যে কবিতে।। ভজিভাবে রঘুনাথে করি**ল পুঞ্জ**ন। काग्रमान वेल्विथ कदिल खबन ॥ ष्मभूक् जीदामद्रामक्था मृननिष्ठ। **बिद्याद्रमाथ करह बिट्रांमहिन्छ।**

প্রীরামচন্দ্র প্রতি বৃক্ষ ও পশু পক্ষাদির তব। রাগিণী মূলতান। তাল কাওরালি। কেন মনঃ মঞ্জনা রে রাঙ্গাপার। তাব রে সেই ভবতর নিবারণ, নবনুর্বাদেন শাদ্য, জীরাম ওণ

श्रीय सामा

शांम, कि कह नो जान हास निकरण किन योत्र ॥ उतिरंग कि खर्ग नग, कि एठांत्र आराष्ट्र मर्थन, द्राम नाम निरम जना, ना १५वि छेशास ॥ उद्घ कान ना ठिखिएन, शत्मान्य ना छानिएन, निकृष्टे कहेन जानि, मस्रमत्र मास्र॥

भगाइ!

বুক্ষণ কহিতেছে রাম দয়াময় ৷ क्देशाहि शङ्कश शाली एतानात्र । তব পূজা করি হে এনত নাহি শক্তি। **्करत अंश्रम प्राप्त आहि यश एकि** !! भवीन श्रमुह्म शृष्ण शहा है हो द्वार । মনের দারুম্ম সদা পুঞ্জি হে ভোমার।। ভবে পশুগণ আসি হত প্রণমিয়া। জ্ঞান আরু বৈর†গানা বিহীন হইর।।। পত্নকুলে জন্মিয়াছি অভি অপকৃষ্ট। বৃথা প্রাণ ধরিয়াছি অতি হরদৃষ্ট ॥ আর কিছু নাহি শক্তি খেদে কান্দে নন ৷ অনিমিক হয়ে ভারি ও রাজা চরণ।। ৰংথাচিত রূপেতে করি হে দর্শন। मामवाद्य कर कुला वाति वदिवन।। সজল নয়নে তার করে পক্ষিগ্র। **उध्यादा शक्य क**रत विठात्रगाः

317377

কুদ্রমতি কৃদ্রস্কাতি প্ররাচার অভি।
ভোমা দেবা হাল কইয়াছি রস্থাতি।
কেবল মলেতে মাথ করি মনস্কার।
আমা সবাকারে দয়া কর একবার।
থিতার করিল ভাব পশু প্রকারণ।
শীরাম চরিত্র শ্রীকেদারমাথ ভণে।

সীতা সহ জীরামনক্ষের ক্রীড়ার গ্রন

करे कारण मकरनाल करतन खरम।

राहे कारनाल छिटिन वारमात घर्षन।

माना वामा वाखार छाइ किरा मुम्पता

वीमा वामा वाखार छाइ किरा मुम्पता

वीमा वामा कुती छाती वाखिर छ्विक है।

माना गुला मीक हरेर छाइ (मेरे क्यांना।

खग्रधनि नमश्यिन मां किन कार्य।।

विख्य विख्य किम सक त्यम धनि कार्य।।

विख्य विख्य किम सक त्यम धनि वारम।।

विख्य विख्य किम सक त्यम धनि ।

महामास कोनाहरन भूतिम (यमिनी।।

काणिर घणी। काणि काणि मध्यार ॥।

महामास वृक्ष शक्यांकी आमि विद्रास्त ।।

प्रमान वृक्ष शक्यांकी आमि कर क्छ।।

वारक मुना महास सक्यांकी स्वास्त्र।।

विद्रख्य किष्ठा सक्यांकी मांनाम।।

(कर् (करु উरेफ़) चरत्र गान कति एए हा। কৈহ দুকা করে কেহ বাদা বাজাইছে 🛭 করিছে প্রশংসা কেই হরিব অন্তরে। बाड़े करले द्रांगमरक श्रीताम विष्टत्त्र गं निक्रानिक्षमधी मीटा श्रमूल नगरन। शद्भिकृते हाझ क्य यन रमनशद्य ।। তেমিয়া একলে মোর গুনত বচন। গন্ধৰ্ম ভিন্নৱ আদি যত ভক্তনণ।। মোর নিখন্তিত যে যে সে সনাতে লয়ে। ভোজন করহ মনে এক ব্রিভ হয়ে।। ज्ञान्त्रिकरम निमञ्जल ना देश्य शाहात ॥ ভোজন কর্চ সবে সহিতে ভাহার॥ সুবেতে ভূপ্তহ নানা রস পুত্রবর। আমার আজ্ঞাত সৰে কর্ছ ভো**জন** ।। নীতা আজা শিরধার্য। করি দেনপথে। গন্ধর্ব কিন্তর আদি আহল দিত মলে।। প্রবর্ত্ত হলেন সবে করিতে ভোজন। আনক্ষেভোজন করি কৈল আচমন। ব্দানকীর অক্স হৈতে যে সব পূর্বেতে। হয়েছিল উৎপন্ন সীতা আদেশেতে।। ঐ কালে জীরাম করিলা আচন্দিতে। खांशपिरन खास नव कवि ऋहे हिट्छ।। সীতা সহ জীড়ায় প্রবর্ত্ত রাম্বন। विशिष्टिन शीमर्थ उका मनाजन॥

তাহার উপমা দিতে নাহি ত্রিসংলারে।
অংশৰ জীরামনীলা কে বর্ণিতে পারে।।
ভকত বৎসল রাম দশরপস্ত।
ক্পামর বিশেষ অংশর গুণমৃত।
জীকেদারনাথ চাতে চরণে শরণ।
রামরাবলীলা কথা হৈল সমপ্রিটি।

ইতি জীক্ষানকাকে সহাযোগে জীউমা মহেশ্বর, সন্মাদে বাসদেব সংহিত্যয়াৎ রাম-ভাস শ্বতি অধ্যায়।